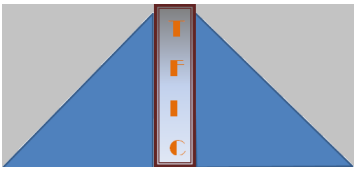

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

जैन-ग्रन्थ-संग्रह।

१२४ सर्वोपयोगी सुललित, सुन्दर, सरस, सम्यग्ज्ञान से सम्पूर्ण धर्म ग्रन्थों का संग्रह किया गया है

संग्रहकर्त्ता—

सि० नन्दकिशोर सांधेलीय-वरायठा, (सागर)।

प्रकाशक—जैन-ग्रन्थ-भंडार, जबलपुर।

प्रथम बार, २००० | रक्षा बन्धन वीर सं० २४५१ | मूल्य १।) मात्र

प्रकाशक का निवेदन।

आज से कई वर्ष पहले मेरा विचार एक ऐसे ही गहन ग्रन्थ का संग्रह प्रकाशित करने का था। उसके पश्चात् जब मुझे श्रीगोमटेश्वरजी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ तब वहीं मैसूर जैन बोर्डिङ्ग में मेरा यह विचार और भी दृढ़ हो गया तब से मेरे सकल परिश्रम के फल स्वरूप जो कार्य हो सका वह आज आप की सेवा में उपस्थित है।

खेद है मेरी अस्वस्थता और कई अनिवार्य असुविधाओं के कारण, प्रकाशन के मार्ग में अनेक बाधायें आ पड़ीं। मेरी बड़ी इच्छा थी कि यह ग्रन्थ वृहत सर्वोपयोगी और सब से सस्ता प्रकाशित हो सके। किन्तु प्रेस की कठिनाइयों और महँगी के कारण मेरी वह इच्छा पूर्ण न हो सकी और मुझे इस ग्रन्थ को लागत मूल्य पर ही बेचने के लिये बाध्य होना पड़ा। यदि विज्ञ पाठकों और धर्मपरायण जैन-समाज ने इसे अपनाकर मेरे क्षीण उत्साह को वर्द्धित किया तो मैं ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण में अपनी इच्छा को पूरा करूंगा।

श्रीमान मास्टर छोटेलालजी प्रकाशक परवार-बन्धु श्रीमान सि० खेमचन्दजी बी. एस. सी. एल. टी. और श्रीमान् भगवन्त गणपति-गोयलीय जी का हृदय से अत्यन्त आभारी हूं जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में विशेष सहायता की है। इसके अतिरिक्त उन सभी विद्वान कवियों और जैनाचार्यों का मैं परम कृतज्ञ हूँ जिनके सुललित, सरस और भक्तिभाव से परिपूर्ण पद्यों के सभाव से मेरा यह प्रयत्न राका रजनी के समान प्रकाशित रहेगा।

जबलपुर,
रक्षा बंधन सं० १९८२

विनीत,
नन्दकिशोर सांधेलीय।

---

१५२ पेज हितकारणी प्रेस जबलपुर में और शेष हिन्दी मंदिर प्रेस जबलपुर में मुद्रित।

विषय-सूची।

नं०	नाम	पृष्ठ	नं०	नाम	पृष्ठ
१,	मंगलाचरण ...	१	१८,	ग्यारह रुद्र ...	८
२,	णमोकार मंत्र ...	१	१९,	चौबीस कामदेव...	९
३,	णमोकारमंत्रकामहात्म्य	१	२०,	चौदह कुलकर ...	९
४,	पञ्च परमेष्ठियों के नाम	१	२१,	बारह प्रसिद्ध पुरुषों के नाम ...	९
५,	वर्तमान चौबीसी	२	२२,	सिद्धक्षेत्रों के नाम	१०
६,	चौबीसतीर्थंकरों के शरीर का वर्ण ...	६	२३,	चौदह गुणस्थान...	१०
७,	चौबीस तीर्थंकरों के निर्वाण क्षेत्र ...	६	२४,	श्रावकके २१ उत्तरगुण	१०
८,	पांचतीर्थंकर बाल-ब्रह्मचारी ...	६	२५,	श्रावककी ५३ क्रियायें	११
९,	तीन तीर्थंकर तीन पदवीधारी ...	६	२६,	ग्यारहप्रतिमाओं का सामान्य स्वरूप	१३
१०,	महा विदेह क्षेत्र के बीस विद्यमान तीर्थंकर ...	६	२७,	श्रावक के १७ नियम	१५
११,	चौबीसअतीततीर्थंकर	७	२८,	सप्तव्यसनका त्याग	१६
१२,	चौबीस अनागत तीर्थंकर ...	७	२९,	बाईसअभक्षकात्याग	१६
१३,	बारह चक्रवर्ती ...	७	३०,	श्रावककेनित्यषट्कर्म	१७
१४,	नव नारायण ...	८	३१,	सामायिकपाठ(भाषा)	१७
१५,	नव प्रति नारायण .	८	३२,	सामयिकपाठ (संस्कृत) ...	२२
१६,	नव बलभद्र ...	८	३३,	दर्शन पाठ	२५
१७,	नव नारद ...	८	३४,	दौलतरामकृतस्तुति	२९
			३५,	दर्शन पचीसी ...	३०
			३६,	शान्तिनाथाष्टकस्तोत्र	३३
			३७,	महावीराष्टक स्तोत्र	३४
			३८,	प्रातःकाल की स्तुति	३५

नं०	नाम	पृष्ठ
३९,	समाधिमरण (कविद्यानतरायकृत)	३६
४०,	बारहभावना (भूधरदासजी कृत)	३८
४१,	सायंकालकी स्तुति	३९
४२,	प्रभाती-संग्रह	४०
४३,	स्तोत्र(द्यानतरायकृत)	४१
४४,	वैराग्य भावना ...	४२
४५,	समाधिमरण (पं०सूरचन्द्रजी कृत)	४५
४६,	जिनवाणीकीस्तुति	५३
४७,	नामावलीस्तोत्र...	५४
४८,	मेरी भावना (पं०जुग-लकिशोरजीकृत)...	५५
४९,	इष्ट छत्तीसी ...	५७
५०,	भक्तामरस्तोत्रसंस्कृत	६६
५१,	हिन्दी भक्तामर(पं० गिरिधरशर्माजी कृत)	७१
५२,	आलोचना पाठ...	७६
५३,	निर्वाणकाण्ड(भाषा)	७९
५४,	निर्वाणकाण्ड गाथा (संस्कृत)...	८१
५५,	पंच कल्याणक पाठ	८२
५६,	छहढाला ... (पं० दौलतरामजी कृत)	९१
५७,	जिन सहस्रनाम स्तोत्र	१०३
५८,	तत्वार्थ सूत्रम् ...	११२
५९,	लघु अभिषेक पाठ	१२४
६०,	विनय पाठ ...	१२८
६१,	देवशास्त्र गुरु-पूजा	१३०
६२,	देवशास्त्र गुरु-पूजा (भाषा) ...	१४४
६३,	बीसतीर्थंकर पूजा (भाषा) ...	१४९
६४,	विद्यमान बीस तीर्थ-करों का अर्घ ...	१५३
६५,	अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ ...	१५३
६६,	सिद्ध पूजा ...	१५५
६७,	सिद्ध पूजा भवाष्टक	१६०
६८,	सोलहकारणकाअर्घ	१६१
६९,	दशलक्षणधर्मकाअर्घ	१६१
७०,	रत्नत्रय का अर्घ	१६१
७१,	बीस तीर्थंकर पूजा की अचरी ...	१६१
७२,	सिद्ध पूजा की अचरी	१६३
७३,	समुच्चय चौवसी पूजा	१६४
७४,	सप्त ऋषि पूजा ...	१६७
७५,	सोलह कारण पूजा	१७१
७६,	दश लक्षण धर्म पूजा	१७४

नं०	नाम	पृष्ठ
७७,	स्वयंभू स्तोत्र ...	१८०
७८,	पंच मेरु पूजा ...	१८२
७९,	रत्नत्रय पूजा ...	१८५
८०,	दर्शन पूजा ...	१८७
८१,	ज्ञान पूजा ...	१८८
८२,	चारित्र पूजा ...	१९१
८३,	न्यामत कृत गजल	१९२
८४,	नन्दीश्वर पूजा ...	१९३
८५,	निर्वाणक्षेत्र पूजा	१९६
८६,	अकृत्रिम चैत्यालय पूजा ...	१९९
८७,	देव पूजा ...	२०५
८८,	सरस्वती पूजा ...	२०६
८९,	गुरु पूजा ...	२१२
९०,	मक्शी पार्श्वनाथ पूजा	२१५
९१,	श्री गिरिनार क्षेत्र पूजा ...	२१६
९२,	सोनागिरि पूजा ...	२२५
९३,	रविव्रत पूजा ...	२३०
९४,	पावापुर सिद्ध क्षेत्र पूजा ...	२३३
९५,	चंपापुर सिद्ध क्षेत्र पूजा ...	२३५
९६,	लघुपंच परमेष्ठी विधान ...	२३८
९७,	सम्मेदशिखरविधान	२५१
९८,	दीप मालिका विधान	२६३
९९,	धारें संस्कृत ...	२६८
१००,	जन्म कल्याणकपूजा	२७०
१०१,	फूलमाल पच्चीसी	२७५
१०२,	तारंगाजीक्षेत्र पूजा	२७८
१०३,	देव शास्त्र गुरुपूजा की अचरी ...	२८१
१०४,	शन्ति पाठ ...	२८२
१०५,	विसर्जनम् ...	२८४
१०६,	बुधजनकृत स्तुति	२८४
१०७,	सुप्रभात स्तोत्रम	२८५
१०८,	दृष्टाष्टक स्तोत्रम्	२८७
१०९,	अष्टाष्टक स्तोत्रम्	२८८
११०,	सूतक निर्णय ...	२८८
१११,	दुःख हरण विनती	२९०
११२,	नेमिनाथ जी का बारह मासा ...	२९२
११३,	बारहमासी राजुल की ...	२९४
११४,	विनती भूधरदास कृत ...	२९५
११५,	निशि भोजन कथा	२९६
११६,	फुटकर गायन ...	२९८
११७,	गजल-दादरा	२९९

नं०	नाम	पृष्ठ	नं०	नाम	पृष्ठ
११८,	पूजा का महात्म्य	३००	१२२,	जिनवाणीकीस्तुति	३०६
११९,	रसिया ...	३००	१२३,	भोजनोंकीप्रार्थनाएं	३०७
१२०,	विनतीभूदरदासकृत	३०१	१२४,	मिथ्यातका फल	३०८
१२१,	दश धर्म के भजन	३०१			

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

ॐकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥ १ ॥
अविरलशब्दघनौघप्रक्षालितसकलभूतलकलंका ।
मुनिभिरुपासिततीर्था सरस्वती हरतु नो दुरितम् ॥
अज्ञानतिमिरांधानां ज्ञानांजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३ ॥
परमगुरवे नमः परम्पराचार्य्यश्रीगुरुवे नमः ।

सकलकलुषविध्वंसकं श्रेयसां परिवर्द्धकं धर्म्मसंवन्धकं भव्यजीवमनःप्रतिवोधकारकमिदं शास्त्रं श्री नाम धेयं......(ग्रन्थ का नाम लेवे) एतन्मूलग्रंथकर्त्तारः श्रीसर्वज्ञदेवास्तदुत्तरग्रंथकर्त्तारः श्रीगणधरदेवास्तेषां वचोनुसारतामासाद्य श्री......(ग्रन्थकर्ता का नाम लेवे) विरचितम् ।

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥
वक्तरः श्रोतारश्च सावधानतया शृण्वन्तु ॥

ॐ

श्रीजिनाय नमः

जैन-ग्रन्थ-संग्रह

णमोकार मन्त्र ।

गाथा ।

११—७   ८—५   ११—७

णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं ।

१२—७   १६—९

णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ।

इस णमोकार मंत्र में पांच पद, पैंतीस अक्षर और अंठावन मात्रा हैं।

णमोकार मंत्र का माहात्म्य ।

एसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणम् च सव्वेसिं, पढ़मं होय मंगलम् ॥

अर्थ—यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है ।

पञ्च परमेष्ठियों के नाम ।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु ।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा । ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

नोट—अ सि आ उ सा नाम पञ्च परमेष्ठी का है ।

ॐ में पंच परमेष्ठी के नाम गर्भित हैं ।

ह्रीं में २४ तीर्थंकरों के नाम गर्भित हैं ।

श्री मन्दिरजी की वेदी गृह में प्रवेश करते ही "जय जय जय निःसहि, निःसहि निःसहि" इस प्रकार उच्चारण करके णमोकार मन्त्र का ९ बार पाठ करे। तत्पश्चात्—

चत्तारि मंगलं—अरहंत मंगलं। सिद्ध मंगलं। साहू मंगलं। केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ॥१॥ चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंत लोगुत्तमा। सिद्ध लोगुत्तमा। साहू लोगुत्तमा। केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ॥ २ ॥ चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंत सरणं पव्वज्जामि। सिद्ध सरणं पव्वज्जामि। साहू सरणं पव्वज्जामि। केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं स्वाहा ॥

यहां पर चौबीस तीर्थंकरों के नाम लेना चाहिए। उन्हें पूजा पाठ में देखिए।

काल सम्बन्धिचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमोनमः।
अद्य मे सफले जन्म नेत्रे च सफले मम।
त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसम्पदः ॥ १ ॥

अद्य संसार गम्भीर पारावारः सुदुस्तरः।
सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥२॥

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते।
स्नातोऽहं धर्मतीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥३॥

अद्य मे सफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमङ्गलम्।
संसारार्णवतीर्णोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥४॥

अद्य कर्माष्टकज्वालं विधूतं सकषायकम्।
दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥५॥

अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैकादशस्थिताः।
नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥६॥
अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणां दुःखदायकः।
सुखसङ्गं समापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥७॥
अद्य कर्माष्टकं नष्टं दुःखोत्पादनकारकम्।
सुखाम्भोधिनिमग्नोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ८ ॥
अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञानदिवाकरः।
उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ९ ॥
अद्याहं सुकृती भूतो निर्धूताशेषकल्मषः।
भुवनत्रयपूज्योऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ १० ॥
चिन्दानन्दैकरूपाय जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः ॥ ११ ॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥ १२ ॥
न हि त्राता न हि त्राता न हि त्राता जगत्त्रये।
वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥ १३ ॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने।
सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥ १४ ॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तम् मा भवन् चक्रवर्त्यपि।
स्यांच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्मानुवासितम् ॥ १५ ॥

उक्त पाठ बोलकर साष्टांग नमस्कार करना चाहिए। नमस्कार के पश्चात् पूजन के लिये चांवल चढ़ाना हो तो नीचे लिखा श्लोक तथा मंत्र पढ़कर चढ़ावे।

अपारसंसारमहासमुद्रप्रोत्तारणे प्राज्यतरीन्सुभक्त्या।
दीर्घाक्षताङ्गैर्धवलाक्षतौघैर् जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥१

ॐ ह्रीं अक्षयपदप्राप्तये देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षतान् निर्वपामि ।

यदि पुष्पों से पूजन करना हो तो नीचे लिखा श्लोक और मंत्र पढ़कर चढ़ावे.

विनीतभव्याब्जविबोधसूर्यान् वर्यान् सुचर्याकथनैकधुर्यान् ।
कुन्दारविन्दप्रमुखैः प्रसूनैर् जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥२॥
ॐ ह्रीं कामबाणविध्वंसनाय देवशास्त्रगुरुभ्यः पुष्पं फलं निर्वपामि ॥

यदि किसीको लौंग, बादाम, इलायची वा कोई प्रासुक हरा फल चढ़ाना हो. तो नीचे लिखा श्लोक और मंत्र पढ़कर चढ़ावे,

क्षुभ्यद्विलुभ्यन्मनसाऽप्यगम्यान् कुवादिवादाऽस्खलितप्रभावान्
फलैरलं मोक्षफलाभिसारैर् जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥३
ॐ ह्रीं मोक्षफलप्राप्तये देवशास्त्रगुरुभ्यः फलं निर्वपामि ॥

यदि किसीको अर्घ चढ़ाना हो तो नीचे लिखा श्लोक व मंत्र बोलकर चढ़ाना चाहिए.

सद्वारिगन्धाक्षतपुष्पजातैर् नैवेद्यदीपामलधूपधूम्रैः ।
फलैर्विचित्रैर्घनपुण्ययोग्यान् जिनेन्द्रसिद्धान्त यतीन् यजेऽहम् ॥४
ॐ ह्रीं अनर्घ्यपदप्राप्तये देवशास्त्रगुरुभ्योऽर्घं समर्पयामि ॥

उपर्युक्त चार प्रकार के द्रव्यों में से जो द्रव्य हों उसी द्रव्य का श्लोक व मंत्र पढ़कर वह द्रव्य चढ़ाना चाहिए । तत्पश्चात् नीचे लिखी स्तुति पढ़ना चाहिए ।

दौलतराम कृत-स्तुति।

दोहा।

सकल-ज्ञेय-ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरि रज रहस विहीन॥

पद्धरि छन्द।

जय वीतराग विज्ञानपूर। जय मोह तिमिर को हरन सूर॥
जय ज्ञान अनंतानंतधार। दृगसुख वीरज मंडित अपार॥१॥
जय परमशांति मुद्रासमेत। भविजनको निज अनुभूतिहेत॥
भवि भागनवश जोगेवशाय। तुम धुनिह्वै सुनि विभ्रम नशाय॥२॥
तुम गुणचिंतत निजपर विवेक। प्रघटै विघटैं आपद अनेक॥
तुम जगभूषण दूषणवियुक्त। सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त॥३॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतनस्वरूप। परमात्म परमपावन अनूप॥
शुभ अशुभ विभावअभावकीन। स्वाभाविकपरिणतिमयअछीन॥४॥
अष्टादशदोषविमुक्त धीर। सुचतुष्टयमय राजत गंभीर॥
मुनि गणधरादि सेवत महंत। नव केवललब्धिरमा धरंत॥५॥
तुम शासन सेय अमेय जीव। शिव गये जाँहिं जै हैं सदीव॥
भवसागर में दुख छारवारि। तारन को और न आप टारि॥६॥
यह लखि निज दुख गदहरण काज। तुमही निमित्तकारण इलाज॥
जानें, तातैं मैं शरण आय। उचरों निज दुख जो चिर लहाय॥७॥
मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप। अपनाये विधिफल पुण्य पाप।
निजको परको करता पिछान। परमें अनिष्टता इष्ट ठान॥८॥
आकुलित भयो अज्ञानधारि। ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि॥
तनपरणति में आपो चितार। कबहूं न अनुभवो स्वपदसार॥९॥

तुमको विन जाने जो कलेश। पाये सो तुम जानत जिनेश॥
पशुनारकनर सुरगतिमँझार। भव धर धर मर्यो अनंतवार॥९॥
अब काललब्धि बलतैं दयाल। तुव दर्शन पाय भयो खुशाल॥
मन शांतभयो मिटसकल द्वंद। चाख्योस्वातमरस दुखनिकंद॥१०॥
तातैं अब ऐसी करहु नाथ। बिछुरै न कभी तुव चरण साथ॥
तुन गुणगणको नहिं छेव देव। जगतारन को तुबिरद एव॥१२॥
आतम के अहित विषय कषाय। इनमें मेरी परिणति न जाय।
मैं रहूं आपमें आप लीन। सो करो होहुँ ज्यों निजाधीन॥१२॥
मेरे न चाह कुछ और ईश। रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश॥
मुझ कारज के कारन सुआप। शिव करहु हरहु मममोहताप॥१३॥
शशि शांतकरन तपहरन हेत। स्वयमेव तथा तुव कुशल देत॥
पीवत पियूष ज्यों रोगजाय। त्यों तुम अनुभव तैं भवनसाय॥१५॥
त्रिभुवन तिहुंकाल मँझार कोय। नहिंतुमविन निजसुखदायहोय
मोउर यह निश्चय भयोआज।दुख जलधिउतारन तुमिजिहाज॥१६॥

दोहा।

तुम गुण गणमणि गणपती, गणत न पावहिं पार।
दौल स्वल्पमति किमि कहै, नमूं त्रियोग संहार॥

इति दौलतराम कृत स्तुति।

श्रीदर्शन पच्चीसी।

तुम निरखत मुझको मिली मेरी संपति आज।
कहा चक्रवति सम्पदा कहा स्वर्ग साम्राज॥१॥
तुम वंदत जिनदेवजी नित नव मंगल होय।
विघ्न कोटि तत्क्षण टरैं लहहिं सुयश सब लोय॥२॥

तुम जाने बिन नाथजी एक स्वांस के मांहि ॥
जन्म-मरण ठारह किये साता पाई नाहिं ॥ ३ ॥
आन देव पूजत लहे दुःख नरक के बीच।
भूख प्यास पशु गत सही करो निरादर नीच ॥ ४ ॥
नाम उचारत सुख लहे दर्शन से अघ जाय।
पूजत पावे देव पद ऐसे हे जिनराय ॥ ५ ॥
बंदत हूं जिनराज मैं धर उर समता भाव।
तन धन जन जग जाल से धर विरागता भाव ॥ ६ ॥
सुनो अरज हे नाथजी त्रिभुवन के आधार।
दुष्ट कर्म का नाश कर बेगि करो उद्धार ॥ ७ ॥
याचत हूं मैं आपसे मेरे जिय के मांहि ।
राग द्वेष की कल्पना क्यों हू उपजे नांहि ॥ ८ ॥
अति अद्भुत प्रभुता लखी वीतरागता मांहि।
विमुख होंहि ते दुख लहैं सन्मुख सुखी लखाहिं ॥ ९ ॥
कलमल कोटिक न रहैं निरखत ही जिन देव।
ज्यों रवि ऊगत जगत में हरै तिमर स्वयमेव ॥ १० ॥
परमाणू पुद्गल तणी परमातम संयोग ।
भई पूज्य सब लोक में हरे जन्म का रोग ॥ ११ ॥
कोटि जन्म में कर्म जो बांधे हते अनंत।
ते तुम छवि अविलोकितें छिन में होय है अंत ॥ १२ ॥
आन नृपति किरपा करे तब कछु दे धन धान।
तुम प्रभु अपने भक्त को कर लो आप समान ॥ १३ ॥
यंत्र मंत्र मणि औषधी विषहर राखत प्राण।
त्यों जिन छवि सब भ्रम हरे करै सर्व प्राधान ॥ १४ ॥

त्रिभुवन पति हो ताहि तैं छत्र विराजे तीन।
चमरा नाग नरेश पद रहे चरण आधीन ॥ १५ ॥
सर्व निरखत भव आपने तुव भामंडल बीच।
भ्रम मेटे समता गहे नाहिं लहे गति नीच ॥ १६ ॥
दोई ओर ढोरत अमर चौसठ चमर सफेद।
निरखत ही भव कौ हरे भव अनेक को खेद ॥ १७ ॥
तरु अशोक तुव हरत है भवि जीवन का शोक।
आकुलता कुल मेटि के करै निराकुल लोक ॥ १८ ॥
अंतर बाहिर परिग्रह त्यागी सकल समाज।
सिंहासन पर रहत हैं अंतरीक्ष जिनराज ॥ १९ ॥
जीत भई रिपु मोह तैं यश सूचत है तास।
देव दुंदुभि के सदा बाजे बजे अकास ॥ २० ॥
बिन अक्षर इच्छा रहित रुचिर दिव्य ध्वनि होय।
सुर नर पशु समझे सबै संशय रहे न कोय ॥ २१ ॥
बरसत सुर तरु के कुसुम गुंजत अलि चहुं ओर।
फैलत सुयश सुवासना हरषत भवि सब ठौर ॥ २२ ॥
समुंद वाघ अरु रोग अहि अर्गल बंधु संग्राम।
विघ्न विषम सबही टरैं सुमरत ही जिन नाम ॥ २३ ॥
श्रीपाल चंडाल पुनि अंजन भील कुमार।
हाथी हरि अहि सब तरे आज हमारी बार ॥ २४ ॥
बुध जन यह बिनती करै हाथ जोड़ शिर नाय।
जब लों शिव नहिं रहे तुव भक्ति हृदय अधिकाय ॥२५॥

शान्तिनाथाष्टक स्तोत्र।

नाना विचित्रंभव दुःख रासी, नाना विचित्रं मोहान् पांशी। पापानि दोषानिहरंति देवा, इह जन्म शरणे श्री शान्तिनाथं ॥ १ ॥ संसार मध्ये मिथ्यात्व चिंता, मिथ्यात्व मध्ये कर्मानि बद्धा। ते बन्ध छेदन्ति देवाधि देवा, इह जन्मे शरणे श्रीशान्तिनाथं ॥ २ ॥ कामस्य क्रोधस्य माया त्रिलो, चतुः कषाय इह जन्म बन्धम्। ते बन्ध छेदन्ति देवाधि देवा, इह जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं ॥ ३ ॥ जातस्य मरणं अवृतस्य वचनं वसंति जीवा बहु दुःख जन्म। ते बंध छेदन्ति देवाधि देवा, इह जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं ॥ ४ ॥ चारित्र हीने नर जन्म मध्ये, सम्यक्त रत्नं प्रतिपाल यंति। ते जीव सीद्धन्ति देवाधि देवा, इह जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं ॥ ५ ॥ मृदु वाक्यहीने कठिनस्य चिन्ता, परजीव हिंसा मनसोच बंधा। ते बंध छेदंति देवाधि देवा, इह जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं॥६॥ परद्रव्य चोरी परदार सेवा, हिंसादि कक्षा अनुवत्त बेधं। ते बंध छेदंति देवाधि देवा, इह जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथं ॥ ७ पुत्रानि मित्रानि कलत्र बंधं, इह वध मध्ये बहु जीव बंधं। ते बंध छेदंति देवाधि देवा, इह जन्म शरणे श्रीशान्तिनाथम् ॥८

जपति पढ़ति नित्यं शान्तिनाथा विशुद्धं
स्तवन मधु गिरायां, पापतापाप हारं
शिव सुख निधि पोतं, सर्व सत्वानुकंपं।
कृत मुनि गुणभद्रं, सर्व कार्या सुनित्यं ॥

इति शान्तिनाथ स्तोत्र

किये नाग नागिन अधः लोक स्वामी। हरो मान तू दैत्य को हो अकामी ॥ ६ ॥ तुम्हीं कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं। तुही दिव्य चिन्तामणी नाग एवं ॥ पशू नर्क के दुःख से तू छुडावे। महा स्वर्ग में मुक्ति में तू बसावे ॥ ७ ॥ करें लोह को हेम पाषाण नामी। रटे नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी ॥ करे सेव ताकी करे देव सेवा। सुने वयन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥ ८ ॥ जपे जाप ताको नहीं पाप लागे। धरे ध्यान ताके सबे दोष भाजे ॥ विना तोह जाने धरे भव घनेरे। तुम्हारी कृपा से सरैं काज मेरे ॥ ९ ॥

दोहा—गणधर इन्द्र न कर सके तुम विनती भगवान।
द्यानत प्रीत निहार के कीजे आप समान ॥१० ॥

वैराग्य भावना।

दोहा।

बीज राख फल भोगवे, ज्यों किसान जगमाहिं।
त्यों चक्री सुख में मगन, धर्म विसारै नाहिं ॥

योगीरासा वा नरेन्द्र छन्द।

इस विधि राज्य करै नर नायक, भोगे पुण्य विशाल। सुख सागर में मग्न निरन्तर, जात न जानो काल ॥ एक दिवस शुभ कर्म योग से, क्षेमंकर मुनि वंदे। देखे श्री गुरु के पद पंकज, लोचन अलि आनंदे ॥ १ ॥ तीन प्रदक्षिणा दे शिर नायो, कर पूजा थुति कीनी। साधु समीप विनय

कर बैठो चरणों में दृग दीनी ॥ गुरु उपदेशो धर्मशिरोमणि, सुन राजा वैरागो। राज्य रमा वनतादिक जो रस, सो सब नीरस लागो ॥ २ ॥ मुनि सूरज कथनी किरणावलि, लगत भर्म बुधि भागो। भव तन भोग स्वरूप विचारो, परम धर्म अनुरागो ॥ या संसार महा वन भीतर, भर्मत छोर न आवे। जन्मन मरन जरादौ दाहे, जीव महा दुख पावे ॥ ३ ॥ कबहूँ कि जाय नर्क पद भुंजे, छेदन भेदन भारी। कबहूं कि पशु पर्याय धरे तहां, बध बन्धन भयकारी। सुरगति में पर सम्पति देखे, राग उदय दुख होई। मानुष योनि अनेक विपति भय, सर्व सुखी नहीं कोई ॥ ४ ॥ कोई इष्ट वियोगी बिलखे, कोई अनिष्ट संयोगी। कोई दीन दरिद्री दीखे, कोई तनका रोगी ॥ किसही घर कलिहारी नारी, के बैरी सम भाई। किसही के दुख बाहर दीखे, किसही उर दुचिताई ॥ ५ ॥ कोई पुत्र विना नित झूरै, होय मरैं तब रोवैं। खोटी संतति से दुःख उपजे, क्यों प्राणी सुख सोवै ॥ पुण्य उदय जिनके तिनको भी, नहीं सदा सुख साता। यह जग वास यथारथ दीखे, सबही हैं दुःख दाता ॥ ६ ॥ जो संसार विषैं सुख होतो, तीर्थंकर क्यों त्यागें। काहे को शिव साधन करते, संयम से अनुरागें ॥ देह अपवान अथिर घिनावनी, इसमें सार न कोई। सागर के जल से शुचि कीजे, तोभी शुद्ध न होई ॥ ७ ॥ सप्त कुधातु भरी मल मूत्र से, चर्म लपेटी सोहै। अन्तर देखत या सम जग में, और अपावन को है ॥ नव मल द्वार स्रवैं निशि वासर नाम लिये घिन आवे। व्याधि उपाधि अनेक जहां तहां, कौन सुधी सुख पावे ॥ ८ ॥ पोषत तो दुख दोष करे अति, सोषत सुख उपजावे। दुर्जन देह स्वभाव बराबर, मूरख प्रीति बढ़ावे ॥ राचन योग्य स्वरूप

न याको, विरचन योग्य सही है। यह तन पोष महा तप कीजे, इस में सार यही है ॥ ९ ॥ भोग बुरे भव रोग बढ़ावें, बैरी हैं जग जीके। वे रस होय विपाक समय अति, सेवत लागें नीके ॥ वज्र अग्नि विषधर से हैं वे, हैं अधिके दुःखदाई। धर्मरत्न को चोर प्रबल अति दुर्गति पन्थ सहाई ॥ १० ॥ मोह उदय यह जीव अज्ञानी, भोग भले कर जाने। ज्यों कोई जन खाय धतूरा, सो जब कंचन माने ॥ ज्यों ज्यों भोग संयोग मनोहर, मन वांछित जन पावे। तृष्णा नागिन त्यों त्यों झंके लहर लोभ विष लावे ॥ ११ ॥ मैं चक्री पद पाय निरन्तर, भोगे भोग घनेरे। तोभी तनक भये ना पूरण, भोग मनोरथ मेरे ॥ राज समाज महा अघ कारण, वैर बढ़ावन हारा। वेश्या सम लक्ष्मी अति चंचल इसका कौन पत्यारा ॥ १२ मोह महा रिपु बैर विचारे, जग जीव संकट डारे। घर कारागृह वनिता बेड़ी, परजन हैं रखवारे ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, ये जिय को हितकारी। ये ही सार असार और सब, यह चक्री जीय धारी ॥ १३ ॥ छोड़े चौदहरत्न नवोनिधि, और छोड़े संग साथी। कोटि अठारह घोड़े छोड़े, चौरासी लख हाथी ॥ इत्यादिक सम्पति बहुतेरी, जीर्ण तृणावत् त्यागी। नीति विचार नियोगी सुत को, राज्य दिया बड़ भागी ॥ १४ ॥ होय निस्सल्य अनेक नृपति संग, भूषण वशन उतारे। श्रीगुरु चरण धरी जिन मुद्रा, पंच महा व्रत धारे ॥ धन्य यह समझ सुबुद्धि जगौत्तम, धन्य वीर्य गुण धारी। ऐसी सम्पति छोड़ बसे वन, तिन पद धोक हमारी ॥ १५ ॥

परिग्रह पोट उतार सब, लीनो चारित्र पंथ।
निज स्वभाव में थिर भये, वज्रनाभि निर्ग्रंथ ॥

समाधिमरण भाषा

(पं० सूरचन्दजी रचित)

वन्दों श्रीअर्हन्त परम गुरु, जो सबको सुखदाई।
इसजगमें दुख जो मैं भुगते, सो तुम जानो राई।
अब मैं अरज करूं नित तुमसे, कर समाधि उरमाँहीं।
अन्तसमयमें यह वर माँगूं, सो दीजे जगराई ॥ १ ॥
भव भवमें तन धार नये मैं, भव भव शुभ सँग पायो।
भव भवमें नृप ऋद्धि लई मैं, मात पिता सुत थायो ॥
भव भवमें तन पुरुष तनो धर, नारीहूँ तन लीनो।
भव भवमें मैं भयो नपुंसक, आतमगुण नहिं चीनो ॥२॥
भव भवमें सुरपदवी पाई, ताके सुख अति भोगे।
भव भवमें गति नरकतनी धर, दुख पायो विधयोगे ॥
भव भवमें तिर्यञ्च योनि धर, पायो दुख अति भारी।
भव भवमें साधर्मी जनको, संग मिलो हितकारी ॥ ३ ॥
भव भवमें जिनपूजन कीनी, दान सुपात्रहि दीनो।
भव भवमें मैं समवसरणमें, देखो जिनगुण भीनो ॥
एती वस्तु मिली भव भवमें, सम्यक् गुण नहिं पायो।
ना समाधियुत मरण करा मैं, ताते जग भरमायो ॥ ४ ॥
काल अनादि भयो जग भ्रमते, सदा कुमरणहिं कीनो।
एक वारहू सम्यकयुत मैं, निज आतम नहिं चीनो ॥
जो निजपरको ज्ञान होय तो, मरण समय दुखदाई।
देह विनाशी मैं निजभाशी, जोति स्वरूप सदाई ॥ ५ ॥
विषय कषायनमें वश होकर, देह आपनो जानो।
कर मिथ्याश्रद्धान हिये विच, आतम नाहिं पिछानो ॥

यों कलेश हिय धार मरणकर, चारों गति भरमायो।
सम्यक्दर्शन ज्ञान तीन ये, हिरदेमें नहिं लायो ॥ ६ ॥
अब या अरज करूं प्रभु सुनिये, मरणसमय यह मागो।
रोग जनित पीड़ा मत होऊ, अरु कषाय मत जागो ॥
ये मुझ मरणसमय दुखदाता, इन हर साता कीजे।
जो समाधियुत मरणहोय मुझ, अरु मिथ्यागद छीजे॥७॥
यह तन सात कुधात मई है, देखत ही घिन आवे।
चर्म लपेटी ऊपर सोहै, भीतर विष्टा पावे ॥
अति दुर्गंध अपावन सो यह, मूरख प्रीति बढ़ावे।
देह विनाशी यह अविनाशी, नित्यस्वरूप कहावे ॥८॥
यह तन जीर्ण कुटीसम मेरो, यातें प्रीति न कीजे।
नूतन महल मिले फिर हमको, यामें क्या मुझ छीजे ॥
मृत्यु होनसे हानि कौन है, याको भय मत लावो।
समता से जो देह तजोगे, तो शुभ तन तुम पावो ॥९॥
मृत्यु मित्र उपकारी तेरो. इस अवसर के माहीं।
जीरण तनसे देत नयो यह, या सम साऊ नाहीं ॥
या सेती तुम मृत्युसमय नर, उत्सव अतिही कीजे।
क्लेशभावको त्याग सयाने, समताभाव धरीजे ॥ १० ॥
जो तुम पूरव पुण्य किये हैं, तिनको फल सुखदाई।
मृत्युमित्र विन कौन दिखावै, स्वर्ग सम्पदा भाई ॥
राग द्वेषको छोड़ सयाने, सात व्यसन दुखदाई।
अन्त समय में समता धारो, पर भव पन्थ सहाई ॥११॥
कर्म महा दुठ वैरी मेरो तासेती दुख पावे।
तन पिंजरे में बंध कियो मुझ, जासों कौन छुड़ावे ॥
भूख तृषा दुख आदि अनेकन, इस ही तनमें गाढ़े।
मृत्युराज अब आप दयाकर तन पिंजर से काढ़े ॥१२॥

नाना वस्त्राभूषण मैंने, इस तन को पहराये।
गंध सुगंन्धित अतर लगाये, षटरस अशन कराये॥
रात दिना मैं दास होयकर, सेव करी तन केरी।
सो तन मेरे काम न आयो, भूल रहो निधि मेरी॥१३॥
मृत्युराय को शरण पाय तन, नूतन ऐसो पाऊं।
जामें सम्यक्रतन तीन लहि, आठो कर्म खपाऊं॥
देखो तन सम और कृतघ्नी, नांहि सुना जग मांही।
मृत्यु समय में वेही परिजन सबहा हैं दुखदाई॥१४॥
यह सब मोह बढ़ावनहारे जियको दुरगति दाता।
इनसे ममत निवारो जियरा, जो चाहो सुख साता॥
मृत्यु कल्पद्रुम पाय सयाने, मांगो इच्छा जेती।
समता धरकर मृत्यु करो तो, पावो संपति तेती॥१५॥
चौ आराधन सहित प्राण तज तौ ये पदवी पावो।
हरि प्रतिहरि चक्री तीर्थेश्वर, स्वर्ग मुकति में जावो॥
मृत्युकल्पद्रुम सम नहिं दाता, तीनों लोक मंझारे।
ताको पाय कलेश करो, मत जन्म जवाहरहारे॥१६॥
इस तनमें क्या राचे जियरा, दिन दिन जीरण हो है।
तेज कांति बल नित्य घटत है, यासम अथिर सु कोहै॥
पांचों इन्द्री शिथल भइ तव, स्वास शुद्ध नहिं आवै।
तापर भी ममता नहिं छोड़े समता उर नहिं लावै॥१७॥
मृत्युराज उपकारी जिय को, तिनके तोहि छुड़ावे।
नातर या तन बंदीग्रह में, पड़ा पड़ा बिललावे॥
पुद्गल के परमाणू मिलके, पिंडरूप तन भासी।
यही मूरती मैं अमूरती, ज्ञानजोति गुणवासी॥१८॥
रोग शोक आदिक जो वेदन, ते सब पुद्गल लारे।
मैं तो चेतन व्याधि विना नित, हैं सो भाव हमारे॥

या तन से इस क्षेत्र संबंधी, कारण आन घनो है।
खानपान दे याको पोषो, अब समभाव ठनो है ॥१९॥
मिथ्यादर्शन आतमज्ञान विन, यह तन अपनो जानो॥
इंद्री भोग गिने सुख मैंने, आपो नाहिं पिछानो॥
तन विनशनतें नाश जानि निज, यह अज्ञान दुखदाई।
कुटुम आदिको अपनो जानो, भूल अनादी छाई॥ २०॥
अब निज भेद यथारथ समझो. मैं हूं ज्योतिस्वरूपो।
उपजे विनशे सो यह पुद्गल, जानो याको रूपो॥
इष्टनिष्ट जेते सुखदुख हैं, सो सब पुद्गल मागे।
मैं जब अपनो रूप विचारो, तब वे सब दुख भागे॥२१॥
विन समता तन नन्त धरे मैं, तिनमें ये दुख पायो।
शस्त्रघाततें नन्त वार मर, नाना योनि भ्रमायो॥
वार नन्तही अग्निमाहिं जर, मूवो सुमति न लायो।
सिंह व्याघ्र अहि नन्तवार मुझ, नाना दुःख दिखायो॥२२॥
विन समाधि ये दुःख लहे मैं, अब उर समता आई।
मृत्युराजको भय नहिं मानो, देवै तन सुख दाई॥
यातैं जबलग मृत्यु न आवे, तबलग जप तप कीजै।
जप तप विन इस जगके माहीं, कोई भी ना सीजै॥२३॥
स्वर्ग संपदा तपसे पावे, तपसे कर्म नशावे।
तपहीसे शिवकामिनिपति है, यासे तप चित लावे।
अब मैं जानी समता विन मुझ, कोऊ नाहिं सहाई॥
मात पिता सुत बान्धव तिरिया ये सब हैं दुखदाई॥२४॥
मृत्यु समयमें मोह करें ये, तातैं आरत होई है॥
आरत तैं गति नीची पावे, यों लख मोह तजो है॥
और परिग्रह जेते जगमें, तिनसे प्रीति न कीजे॥
परभवमें ये संग न चालैं, नाहक आरत कीजे॥ २५॥

जे जे वस्तु लगत हैं तुझ पर, तिनसे नेह निवारो।
परगतिमें ये साथ न चालें, ऐसो भाव विचारो॥
जो परभवमें संग चलै तुझ, तिनसे प्रीति सु कीजे।
पंच पाप तज समता धारो, दान चार विध दीजे॥२६॥
दशलक्षणमय धर्म धरो उर, अनुकम्पा चित लावो।
षोड़श कारण नित्य चिन्तवो, द्वादश भावना भावो॥
चारों परवी प्रोषध कीजे, अशन रातिको त्यागो।
समता धर दुरभाव निवारो, संयमसूं अनुरागो॥२७॥
अन्तसमयमें ये शुभ भावहि, होवें आनि सहाई।
स्वर्ग मोक्षफल तेहि दिखावें, ऋद्धि देय अधिकाई॥
खोटे भाव सकल जिय त्यागो, उरमें समता लाके।
जासेती गति चार दूर कर, वसो मोक्षपुर जाके॥ २८॥
मन थिरता करके तुम चिंतो, चौ आराधन भाई।
येही तोकों सुखकी दाता, और हितू को नाई॥
आगे बहु मुनिराज भये हैं तिन गहि थिरता भारी।
बहु उपसर्ग सहे शुभ भावन, आराधन उर धारी॥२९॥
तिनमें कछु इक नाम कहूं मैं सो सुन जिय! चित लाके।
भावसहित अनुमोदै तामें, दुर्गति होय न जाके॥
अरु समता निज उरमें आवै, भाव अधीरज जावे।
यों निश दिन जो उन मुनिवरको, ध्यान हिये विचलावे॥३०॥
धन्य धन्य सुकुमाल महामुनि, कैसी धीरज धारी।
एक श्यालनी युगबच्चायुत, पांव भखो दुखकारी॥
यह उपसर्ग सह्यो धर थिरता आराधन चित धारी।
तो तुमरे जिय कौन दुःख है? मृत्यु महोत्सव वारी॥ ३१॥
धन्य धन्य जु सुकौशल स्वामी, व्याघ्रीने तन खायो।
तौ भी श्रीमुनि नेक डिगे नहिं, आतमसों हित लायो॥

इहभाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि, करत शिवपंकति मचूं
अरहंत श्रुत सिद्धांत गुरु निरग्रंथ नित पूजा रचूं ॥

दोहा- वसुविधि अर्घ सँजोयके, अति उछाह मन कीन ।
जासों पूजों परम पद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥६॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥६॥

अथ जयमाला ।

देवशास्त्रगुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार ।
भिन्न भिन्न कहुं आरती, अल्प सुगुण विस्तार ॥ १ ॥

पद्धड़ि छन्द ।

चउकर्मकि त्रेसठ प्रकृति नाशि । जीते अष्टादशदोषराशि जे परम सगुण हैं अनन्त धीर । कहवत के छयालिस गुण गँभीर ॥ २ ॥

शुभसमवसरण शोभा अपार । शत इन्द्र नमत कर सीस धार । देवादिदेव अरहन्त देव । वन्दों मनवचतनकरि सुसेव ॥३॥

जिन की धुनि है ओंकाररूप । निर अक्षरमय महिमा अनूप । दश-अष्ट महाभाषा समेत । लघुभाषा सात शतक सुचेत ॥ ४ ॥

सो. स्याद्वादमय सप्तभंग । गणधर गूंथे बारहसुअंग रवि शशि न हरै सो तम हराय । सो शास्त्र नमोंबहु प्रीति ल्याय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र ममसन्निहितो भवभववषट्

गीता छन्द

सुरपति उरग नरनाथ तिनकर, वन्दनीक सुपदप्रभा ।
अति शोभनीक सुवरण उज्जल, देख छवि मोहित सभा ॥
वर नीरक्षीर समुद्रघटभरि,अग्र तसु बहु विधि नचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रन्थ नित पूजा रचूं ॥१॥

दोहा—मलिन वस्तु हर लेत सब, जलस्वभाव मलछीन ।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥१॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जे त्रिजग उदरमँझार प्रानी, तपत अति दुद्धर खरे ।
तिन अहितहरन सुवचन जिनके, परम शीतलता भरे ॥
तसु भ्रमरलोभित घ्राण पावन, सरस चन्दन घसि सचूं ।
अरहंत श्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥२॥

दोहा—चन्दन शीतलता करै, तपतवस्तु परवीन ।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥२॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

यह भवसमुद्र अपार तारण, के निमित्त सुविधि ठई ।
अति दृढ़ परमपावन यथारथ, भक्ति वर नौका सही ॥
उज्जल अखंडित सालि तंदुल,-पुंज धरि त्रयगुण जचूं ।
अरहंतश्रुतिसिद्धांतगुरु निरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥३॥

दोहा—तंदुल सालि सुगन्धि अति, परम अखंडित चीन।
जासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

जे विनयवंत सुभव्यउरअंबुजप्रकाशन भान हैं।
जे एकमुखचारित्र भाषत, त्रिजगमाहिं प्रधान हैं॥
लहि कुंदकमलादिक पहुप, भव भव कुवेदनसों बचूं।
अरहंतश्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ४ ॥

दोहा—विविधभाँति परिमल सुमन, भ्रमर जास आधीन।
तासों पूजों परमपद, देव शास्त्र गुरु तीन ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

अति सबल मदकंदर्प जाको, क्षुधा उरग अमान है।
दुस्सह भयानक तासु नाशनको सु गरुड़समान है॥
उत्तम छहों रसयुक्त नित नैवेद्य करि घृतमें पचूं।
अरहंतश्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ५ ॥

दोहा—नानाविधि संयुक्तरस, व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजों परमपद, देवशास्त्र गुरु तीन ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यः क्षुधारोगविनाशाय चरुं निर्वपामीति स्वाहा ॥५ ॥

जे त्रिगज उद्यम नाश कीनें मोहतिमिर महाबली।
तिहिकर्मघाती ज्ञानदीपप्रकाशजोति प्रभावली॥
इह भाँति दीप प्रजाल कंचनके सुभाजनमें खचूं।
अरहंतश्रुतसिद्धांतगुरुनिरग्रंथ नितपूजा रचूं ॥ ६ ॥

भविक-सरोज-विकासि, निंद्यतमहर रविसे हो।
जति श्रावक आचार कथन को, तुम्हीं बड़े हो॥

फूलसुवास अनेकसों (हो), पूजों मदन प्रहार। सीमं० ॥४॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥

कामनाग विषधाम-नाशको गरुड़ कहे हो।
छुधा महादवज्वाल, तासुको मेघ लहे हो।
नेवज बहु घृत मिष्टसों (हो), पूजों भूख विडार। सीमं०॥५॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ॥

उद्यम होन न देत, सर्व जगमाहिं भरयो है।
मोह महातम घोर, नाश परकाश करयो है॥

पूजों दीपप्रकाशसों (हो) ज्ञानज्योतिकरतार। सीमं० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनायदीपं निर्व० ॥

कर्म आठ सब काठ,-भार विस्तार निहारा।
ध्यान अगनिकर प्रगट, सरब कीनों निरवारा।

धूप अनूपम खेवतें (हो), दुख जलै निरधार। सीमं० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्व० ॥

मिथ्यावादी दुष्ट, लोभऽहंकार भरे हैं।
सबको छिनमें जीत, जैनके मेर खरे हैं॥

फल अति उत्तमसों जजों (हौं), वांछितफलदातार। सीमं०॥८॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलंनिर्व०

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीत धरी है।
गणधर इंद्रनिहूतैं, थुति पूरी न करी है।

'द्यानत' सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार। सीमं० ॥९॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व०

अथ जयमाला आरती।

सोरठा।

ज्ञानसुधाकर चंद, भविकखेतहित मेघ हो।
भ्रमतमभान अमंद, तीर्थंकर बीसों नमों॥ १॥

चौपाई।

सीमंधर सीमंधर स्वामी। जुगमंधर जुगमंधर नामी।
बाहु बाहु जिन जगजन तारे। करम सुबाहु बाहुबल दारे॥१॥
जोत सुजात केवलज्ञानं। स्वयंप्रभू प्रभु स्वयं प्रधानं।
ऋषभानन ऋषि भानन दोषं। अनंत वीरज वीरअकोषं॥ २॥

गुरू आचारज उवझाय साध। तन नगन रतनत्रयनिधि अगाध। संसारदेहवैराग धार। निरवांछि तपैं शिवपद निहार ॥ ६ ॥

गुण छत्तिस पच्चिस आठ बीस। भव तारन तरन जिहाजईस। गुरु की महिमा वरनी न जाय। गुरुनाम जपों मनवचनकाय ॥ ७ ॥

सोरठा-कीजे शक्ति प्रमान, शक्ति विना सरधा धरै
'द्यानत' सरधावान, अजर अमरपद भोगवै ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्रगुरुभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस तीर्थंकर पूजा भाषा।

दीप अढ़ाई मेरु पन, अब तीर्थं करबीस
तिन सबकी पूजा करूं, मनवचतन धरि शीस ॥ १

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरा! अत्र अवतरत अवतरत। संवौषट्।

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरा! अत्र तिष्ठत तिष्ठत। ठःठः।
ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरा! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत। वषट्।

इन्द्रफणींद्रनरेंद्र वंद्य, पद निर्मलधारी।
शोभनीक संसार, सार गुण हैं अविकारी।

क्षीरोदधिसम नीरसों (हो), पूजों तृषा निवार।
सीमंधर जिन आदि दे, बीस विदेहमँझार॥
श्रीजिनराज हो भव, तारणतरणजिहाज॥१॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥

यदि बीस पुंज करना हो, तो इस प्रकारमंत्र पढ़ें

ॐ ह्रीं सीमन्धर-युग्मंधर-बाहु-सुबाहु-संजात-स्वयंप्रभ-ऋषभानन-अनन्तवीर्य्य-सूरप्रभ-विशालकीर्ति-वज्रधर-चन्द्रानन-चन्द्रबाहु-भुजंगम-ईश्वर-नेमिप्रभ-वीर-महाभद्र-देवयशाऽजितवीर्य्येति विंशतिविद्यमानतीर्थंकरेभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

तीन लोक के जीव, पाप आताप सताये।
तिनकों साता दाता, शीतल वचन सुहाये॥
वावन चंदनसों जजूं (हो) भ्रमनतपन निरवार। सीमं०॥२॥

ॐ ह्रीं विद्यमान विंशतितीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय-चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

यह संसार अपार, महासागर जिनस्वामी
तातैं तारे बड़ी भक्ति-नौका जग नामी॥

तंदुल अमल सुगंधसों (हो), पूजों तुम गुणसार। सीमं०॥३॥

ॐ० ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०॥

सौरीप्रभ सौरीगुणमालं। सुगुण विशाल विशाल दयालं।
वज्रधार भवगिरिवज्जर हैं। चन्द्रानन चन्द्रानन वर है ॥३॥
भद्रबाहु भद्रनिके करता। श्रीभुजंग भुजंगम भरता।
ईश्वर सबके ईश्वर छाजैं। नेमिप्रभु जस नेमि विराजैं ॥४॥
वीरसेन वीर जग जानै। महाभद्र महाभद्र बखानै।
नमों जसोधर जसधरकारी। नमों अजितवीरज बलधारी॥५॥
धनुष पांचसै काय विराजै। आयु कोड़िपूरव सब छाजै।
समवसरण शोभित जिनराजा। भवजलतारनतरन जिहाजा॥६॥
सम्यक रत्नत्रयनिधि दानी। लोकालोकप्रकाशक ज्ञानी।
शत इन्द्रनिकरि वंदित सोहै। सुरनर पशु सबके मन मोहै ॥७॥

दोहा।

तुमको पूजै बंदना, करै धन्य नर सोय।
'द्यानत' सरधा मन धरै, सो भी धरमी होय ॥८॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ विद्यमानवीसतीर्थंकरोंका अर्घ।

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमङ्गलगानरवांकूले जिनगृहे जिनराजमहं यजे ॥१॥

ॐ ह्रीं सीमंधरयुगमंधरबाहुसुबाहुसंजातस्वयंप्रभऋषभाननअनन्तवीर्यसूरप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचन्द्राननचन्द्रबाहुभुजंगमईश्वरनेमिप्रभवीरसेनमहाभद्रदेवयशअजित वीर्येति विंशतिविद्यमानतीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ १ ॥

अकृत्रिम चैत्यालयोंका अर्घ।

कृत्याऽकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान्
वन्दे भावनव्यन्तरान्द्युतिवरान्कल्पामरान्सर्वगान्।

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितं भव भव। वषट् सोरठा।

क्षीरोदधि उनहार, उज्जल जल अति सोहना।
जनमरोगनिरवार, सम्यकरत्नत्रय भजों ॥१॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मरोगविनाशनाय जलं निर्वपामि ॥१॥

चंदन केसर गारि, परिमल महा सुरंगमय। जन्मरोग० ॥२॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामि० ॥२॥

तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदासके। जन्मरो०॥३॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामि० ॥३॥

महकैं फूल अपार, अलि गुंजें ज्यों श्रुति करैं। जन्मरो० ॥४॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि० ॥४॥

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धता। जन्मरो० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०
दीपरतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में। जन्मरो० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व०
धूप सुवास विथार, चन्दन अर्घ कपूरकी। जन्मरो० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि० ॥ ७ ॥
फलशोभा अधिकार, लोंग छुआरे जायफल। जन्मरो० ॥ ८ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि० ॥८॥
आठदरब निरधार, उत्तमसों उत्तम लिये। जन्मरो० ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामि० ॥९॥

सम्यकदरसनज्ञान, व्रत शिवमग तीनों मयी।

पार उतारन जान, 'द्यानत' पूजौं व्रतसहित ॥ १० ॥
ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामि० ॥ १० ॥

दर्शनपूजा।

दोहा—सिद्ध अष्टगुनमय प्रगट, मुक्तजीवसोपान।
जिहविन ज्ञानचरित अफल, सम्यकदर्श प्रधान ॥१॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शन! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शन! अत्र मम सन्निहितं भव भव। वषट्

सोरठा।
नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यकदर्शनसार, आठ अङ्ग पूजौं सदा ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥
जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै। सम्यकद० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै। सम्यकद० ॥३॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्यकद० ॥४॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥
नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै। सम्यकद०॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥
दीपज्योति तमहार, घटपट परकाशै महा। सम्यकद० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥
धूप ध्यानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै। सम्यकद० ॥ ७ ॥
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥
श्रीफलादि विथार, निहचै सुरशिवफल करै। सम्यकद० ॥८॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥
जल गन्धाक्षत चारु; दीप धूप फल फूल चरु। सम्यकद० ।९।
ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसम्यग्दर्शनाय अर्घ्यं निर्वपामीति० ॥ ९ ॥

जयमाला।

दोहा—आप आप निहचै लखै, तत्त्वप्रीति व्योहार।
रहितदोष पच्चीस है, सहित अष्ट गुन सार॥१॥

चौपाईमिश्रित गीता छंद।

सम्यकदरसन रतन गहीजै। जिन वचनमैं सन्देह न कीजै।
इहभव विभवचाह दुखदानीं। परभवभोग चहै मत प्रानी॥
प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरुप्रभु परखिये।
परदेश ढकिये धरम डिगते को सुथिर कर हरखिये॥
चहुँसंघको वात्सल्य कीजे, धरमकी परभावना।
गुन आठसों गुन आठ लहिकै, इहां फेर न आवना॥ ३॥

ॐ ह्रीं अष्टाङ्गसहितपञ्चविंशतिदोषरहिताय सम्यग्दर्शनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥

ज्ञानपूजा।

दोहा—पंचभेद जाके प्रगट, ज्ञेयप्रकाशन भान॥
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यकज्ञान॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञान अत्र मम सन्निहितं भव भव। वषट्।

सोरठा।

नीर सुगन्ध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यकज्ञान विचार, आठभेद पूजौं सदा॥ १॥

ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १॥
जलकेसर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्यकज्ञा० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥
अछत अनूप निहार, दारिद नाशे सुख भरै। सम्यकज्ञा० ॥३॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षतंनिर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥
पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्यकज्ञा० ॥४॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥
नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै। सम्यकज्ञा० ॥५॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥
दीपज्योतितमहार, घटपट परकाशे महां। सम्यकज्ञा० ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यक्ज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥
धूप घानसुखकार, रोग विघन जड़ता हरै। सम्यकज्ञा० ॥७॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥
श्रीफल आदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै। सम्यकज्ञा०॥८॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥
जल गन्धाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्यकज्ञा० ॥९॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अथ जयमाला।

दोहा।

आप आप जानै नियत, ग्रंथपठन व्योहार।
संशय विभ्रम मोह विन, अष्टअंग गुनकार॥ १ ॥

चौपाई मिश्रित गीता छन्द।

सम्यकज्ञानरतन मन भाया। आगम तीजा नैन बताया।
अक्षर शुद्ध अरथ पहिचानौ। अक्षर अरथ उभय सँग जानौ॥
जानौं सुकालपठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइये।

तपरीति गहि बहु मान देकैं, विनयगुन चित लाइये ॥
ए आठभेद करम उछेदक, ज्ञानदर्पन देखना।
इस ज्ञानहीसों भरत सीझा, और सब पटपेखना ॥२॥
ॐ ह्रीं अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

चारित्रपूजा ॥

दोहा।

विषयरोगऔषध महा, दवकषायजलधार।
तीर्थंकर जाकौं धरैं, सम्यकचारितसार ॥१॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्र! अत्र मम सन्निहितं भव भव। वषट्

सोरठा।

नीर सुगंध अपार, त्रिषा हरै मल छय करै।
सम्यकचारित धार, तेरहविध पूजौं सदा ॥१॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय जलं निर्वपामीति०
जल केशर घनसार, ताप हरै शीतल करै। सम्यकचा० ॥२॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय चंदनं निर्वपामीति०
अक्षत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै। सम्यकचा० ॥३॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा
पहुपसुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै। सम्यक० ॥४॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा
नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै। सम्यक० ॥५॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति०

दीपजोति तमहार, घटपट परकाशै महा। सम्यकचा० ॥६॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा
धूप घ्रान सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै। सम्यकचा० ॥७॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥
श्रीफलआदि विथार, निहचै सुरशिवफल करै। सम्यक० ॥८॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु। सम्यक० ॥९॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अथ जयमाला।

दोहा-आपआप थिर नियत नय, तपसंजम व्योहार।
स्वपर दया दोनों लिये, तेरहविध दुखहार ॥ १ ॥

चौपाई मिश्रित गीता छंद।

सम्यकचारित रतन संभालो। पांच पाप तजिकें व्रत पालो।
पंचसमिति त्रय गुपति गहीजै। नरभव सफल करहु तन छीजै
छीजै सदा तनको जतन यह, एक संजम पालिये।
बहु रुल्यो नरकनिगोदमाहिं, कषायविषयनि टालिये॥
शुभकरमजोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है।
'द्यानत' धरमको नाव बैठो, शिवपुरी कुशलात है ॥२॥
ॐ ह्रीं त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय महार्घ्यं निर्वपामीति०

अथ समुच्चय जयमाला।

दोहा-सम्यकदरशन ज्ञान व्रत, इन विन मुकत न होय।
अंध पंगु अरु आलसी, जुदे जले दव-लोय ॥ १ ॥

चौपाई १६ मात्रा।

तातैं ध्यान सुथिर घन आवै। ताके करमबंध कट जावै।
तासों शिवतिय प्रीति बढ़ावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥२॥
ताकों चहुँगतिके दुख नाहीं। सो न परै भवसागरमाहीं॥

जनमजरामृतु दोष मिटावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥३॥
सोइ दशलक्षनको साधै। सो सोलहकारण आराधै ॥
सो परमातम पद उपजावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥४॥
सोई शक्रचक्रिपद लेई। तीनलोकके सुख विलसेई ॥
सो रागादिक भाव वहावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥५॥
सोई लोकालोक निहारै। परमानंददशा विसतारै ॥
आप तिरै औरन तिरवावै। जो सम्यकरतनत्रय ध्यावै ॥६॥

दोहा।

एकस्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय।
तीनभेद व्योहार सब, ज्ञानतको सुखदाय ॥७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्रत्नत्रयाय महर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घ्यके बाद विसर्जन करना चाहिये)

न्यामतकृत—गजल।

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहिं चैन पड़ती है। छवी वैराग्य तेरी सामने आंखों के फिरती है ॥ टेक ॥ निरा भूषण विगत दूषण परम आसन मधुर भाषण। नजर नैनोंकी नाशाकी अनीसे पर गुजरती है ॥१॥ नहीं करमोंका डर हमको कि जब लग ध्यान चरणों में। तेरे दर्शनसे सुनते कर्म रेखा भी बदलती है ॥२॥ मिले गर स्वर्गकी संपति, अचंभा कौनसा इसमें; तुम्हें जो नयन भर देखे गती दुरगतिकी टरती है ॥३॥ हजारों मूरते हमने बहुत सी गौर कर देखीं शांति मूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढ़ती है ॥४॥ जगत सरताज हो जिनराज, न्यामतको दरश दीजे, तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है ॥५॥

श्री नन्दीश्वर दीप (अष्टाह्निका) की पूजा।

अडिल्ल।

सर्व परव में बड़ो अठाई पर्व है।
नंदीश्वर सुर जाहिं लेंय वसु दरब हैं।
हमें सकति सो नाहिं इहां कर थापना।
पूजों जिनगृह प्रतिमा है हित आपना ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपेद्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्। ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपेद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। श्रीनन्दीश्वरद्वीपेद्विपंचाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमा समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

कंचनमणिमय भृङ्गार, तीरथनीर भरा।
तिहुँ धार दयो निरवार, जामन मरन जरा॥
नन्दीश्वर श्रीजिनधाम, बावन पुज्ज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनँदभाव धरों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

भवतपहर शीतलवास, सो चन्दननाहीं।
प्रभु यह गुन कीजे सांच, आयो तुम ठांहीं ॥ नंदी० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्तये चंन्दनं निर्वपामि ॥ १ ॥

उत्तम अक्षत जिनराज, पुञ्ज धरे सोहैं।
सब जीते अक्षसमाज, तुम सम अर को है ॥ नंदी० ॥ ३ ॥

निर्वपामि ॥ ६ ॥

अथ प्रत्येक अर्घ।

चौपाई।

अधोलोक जिनआगमसाख। सात कोड़ि अरु बहतरलाख ॥
श्रीजिनभवनमहा छबि देइ। ते सब पूजौं वसुविध लेइ ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिसप्तकोटिद्विसप्ततिलक्षाकृत्रिम श्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥ १ ॥

मध्यलोकजिनमन्दिरठाठ। साढ़े चारशतक अरु आठ ॥
ते सब पूजों अर्घ चढ़ाय। मनवचतन त्रयजोग मिलाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशतश्रीजिन-चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि ॥ २ ॥

अडिल्ल।

ऊर्द्धलोककेमाहिं भवनजिन जानिये।
लाख चौरासी सहस सत्यानव मानिये ॥
तापै धरि तेईस जजौं शिरनायकैं।
कंचनथालमझार जलादिक लायकैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ऊर्द्धलोकसम्बन्धिचतुरशीतिसप्तनवतिसहस्र-त्रयोविंशतिश्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यम् ॥ ३ ॥

गीताछन्द।

वसुकोटि छप्पनलाख ऊपर, सहससत्याणव मानिये।
सतच्यारपैं गिन ले इक्यासी, भवनजिनवर जानिये ॥
तिहुँलोकभीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करैं।
तिन भवन को हम अर्घ लेकैं, पूजि हैं जगदुख हरैं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिषट्पंचाशल्लक्षसप्तन-

वतिसहस्त्रचतुःशतैकशीतिअकृत्रिमजिन चैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामि ॥ ४ ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

अब वरणों जयमालिका, सुनेा भव्य चित लाय।
जिनमन्दिर तिहुँ लोकके, देहुँ सकल दरसाय ॥ १ ॥

पद्धड़िछंद।

जय अमल अनादि अनन्त जान। अनिमित जु अकीर्तम अचल मान। जय अजय अखण्ड अरूपधार। पट द्रव्य नहीं दीसैं लगार ॥ २ ॥

जय निराकार अधिकार होय। राजत अनन्तपरदेश सोय। जय शुद्ध सुगुण अवगाहपाय। दशदिशामांहि इहविधि लखाय ॥ ३ ॥

यह भेद अलोकाकाश जान। तामध्य लोक नभ तीन मान ॥ स्वयमेव बन्यो अविचल अनंत। अविनाशि अनादिजु कहत संत ॥ ४ ॥

पुरुषाकार ठाड़ो निहार। कटि हाथ धारि द्वै पग पसार ॥
दच्छिन उत्तरदिशि सर्व ठौर। राजू जुसात भाख्यो निचोर ॥५॥
जय पूर्व अपर दिशि घाटवाधि। सुन कथन कहूँ ताको जु साधि॥
लखि श्वभ्रतलैं राजू जु सात। मधिलोक एक राजू रहात ॥६॥
फिर ब्रह्मसुरग राजु जु पांच। भू सिद्ध एक राजू जु सांच ॥
दश चार ऊंच राजु गिनाय। पटद्रव्य लये चतुकोण पाय॥७॥
तसु वातवलय लपटाय तीन। इह निराधार लखियो प्रवीन ॥
त्रसनाड़ी तामधि जान खास। चतुकोन एक राजू जु व्यास॥८॥
राजू उतंग चौदह प्रमान। लखि स्वयंसिद्ध रचना महान ॥

तामध्य जीव त्रस आदि देय । निज थान पाय तिष्ठे भलेय॥९॥
लखि अधोभागमें शुभ्रथान । गिन सात कहे आगम प्रमान ॥
षटथानमाहिं नारकि बसेय । इक शुभ्रभाग फिर तीन भेय ॥१०॥
तसु अधोभाग नारकि रहाय पुनि ऊर्द्धभाग द्वव थान पाय ॥
बस रहे भवन व्यंतर जु देव । पुर हर्म्य छजै रचना स्वमेंव॥११॥
तिह थान गेह जिनराज भाख । गिन सातकोटि बहुतर जु लाख॥
ते भवन नमों मनवचनकाय । गतिशुभ्रहरनहारे लखाय ॥१२॥
पुनि मध्यलोक गोलाअकार । लखि दीप उदधि रचना विचार॥
गिन असंख्यात भाखे जुसंत । लखिशंभुरमन सबके जुअंत॥१३॥
इक राजुव्यास में सर्व जान । मधिलोकतनों इह कथन मान ॥
सबमध्य दीप जंबू गिनेय । त्रयदशम रुचिकवर नाम लेय ॥१४॥
इन तेरहमें जिमधाम जान । सतचार अठावन हैं प्रमान ॥
खग देव असुर नर आय आय । पद पूज जाँय शिर नाय ॥१५॥
जय उर्द्धलोकसुरकल्पवास । तिहँ थान छजे जिनभवन खास ॥
जय लाखचुरासीपैलखेय । जय सहस सत्याणव और ठेय॥१६॥
जय बीसतीन पुनि जोड़ देय । जिनभवन अकीतम जान लेय ॥
प्रतिभवन एक रचना कहाय । जिनबिंब एकसत आठ पाय॥१७॥
शतपंच धनुष उन्नत लसाय । पदमासनजुत वर ध्यान लाय ॥
शिर तीनछत्रशोभितविशाल । त्रय पादपीठ मणिजड़ितलाल॥१८
भामंडलकी छबि कौन गाय । पुनि चँवर ढुरत चौसठि लखाय॥
जय दुंदुभिरव अदभुत सुनाय । जयपुष्पवृष्टि गंधोदकाय ॥१९॥
जय तरुअशोक शोभा भलेय । मंगल विभूति राजत अमेय ॥
बटतूप छजे मणिपाल पाय । घटधूपधूम्र दिग सर्व छाय ॥२०॥
जय केतुपंक्ति सोहै महान । गंधर्वदेव गुन करत गान ॥
सुर जनम लेत लखि अवधि पाय । तिस थान प्रथम पूजन
कराय ॥२१॥

जिनगेहतणा वरनन अपार। हम तुच्छबुद्धि किम लहत पार॥
जयदेव जिनेसुर जगत भूप। नमि 'नेम' मँगै निज देहरूप॥२२॥

दोहा।

तीनलोकमें सासते, श्रीजिनभवन विचार॥
मनवचतन करि शुद्धता, पूजों अरघ उतार॥ २३॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यष्टकोटिपट्पंचाशल्लक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतकाशीतिअकृत्रिमश्रीजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामि॥ २३॥

(यहां विसर्जन भी करना चाहिये।

कवित्त।

तिहुँ जगभीतर श्रीजिनमंदिर, घने अकोत्तम अति सुखदाय।
नर सुर खग करि वंदनोक जे, तिनको भविजन पाठ कराय॥
धनधान्यादिक संपति तिनके, पुत्रपौत्र सुख होत भलाय।
चक्री सुर खग इंद्र होयके, करम नाश सिवपुर सुख थाय॥२४॥

(इत्याशीर्वादाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

देव पूजा।

दोहा।

प्रभु तुम राजा जगतके, हमें देय दुख मोह।
तुम पद पूजा करत हूँ, हमपै करुना होहि॥ १॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्रीजिनेन्द्रभगवन् अत्र अवतरावतर। संवौषट्। *

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-

* संवौषडिति देवोहदेशेन हविस्त्यागे।

जिनेन्द्रभगवन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। +

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेन्द्रभगवन् अत्र मम सन्निहितो भव भव! वषट्। ‡

छंद त्रिभंगी।

बहु तृषा सतायो, अति दुख पायो, तुमपै आयो जल लायो।
उत्तम गंगा जल, शुचि अति शीतल, प्राशुक निर्मल, गुन गायो॥
प्रभु अंतरजामी, त्रिभुवननामी, सबके स्वामी दोष हरो।
यह अरज सुनीजै, ढील न कीजै, न्याय करीजै, दया धरो॥१॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेन्द्रभगवद्भ्यो जन्माजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥

अघतपत निरंतर, अगनिपटंतर, मो उर अंतर, खेद कर्‌यौ।
लै बावन चंदन, दाहनिकंदन, तुमपदवंदन, हरष धर्‌यो॥प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेभ्यो भवतापनाशाय चन्दनं॥ २॥

औगुन दुखदाता, कह्यो न जाता, मोहि असाता, बहुत करै।
तंदुल गुनमंडित, अमल अखंडित, पूजत पंडित, प्रीति धरै॥प्रभु०

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशसद्गुणसहित-श्रीजिनेभ्योअक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति॥ ३॥

सुरनर पशु को दल, काम महाबल, बात कहत छल, मोह लिया।
ताके शर लाऊं फूल चढ़ाऊं, भगति बढ़ाऊं, खोल हिया॥प्रभु०

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेभ्योकामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि॥ ४॥

+ ठः ठः इति वृहद्ध्वनौ।

‡ वषडिति देवोद्देश्यकहविस्त्यागे।

सब दोषनमाहीं, जासम नाहीं, भूख सदा ही मो लागै।
सद घेवर बावर, लाडू बहु धर, थार कनक भर तुम आगैं॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेभ्योक्षुद्रोगनाशाय नैवेद्यं ॥ ५ ॥

अज्ञान महातम, छाय रह्यो मम, ज्ञान ढक्यो हम, दुख पावैं।
तम मेटनहारा, तेज अपारा, दीप सँवारा, जस गावैं॥ प्रभु०॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेभ्योमोहान्धकारविनाशाय दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

इह कर्म महावन, भूल रह्यो जन, शिवमारग नहिं पावत है।
कृष्णागरुधूपं, अमलअनूपं, सिद्धस्वरूपं, ध्यावत है॥
प्रभु अंतरयामी, त्रिभुवननामी, सब के स्वामी, दोष हरो।
यह अरज सुनीजै, ढील न कीजै, न्याय करीजै, दया धरो॥ ७॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेभ्योअष्टकर्मदहनाय धूपं० ॥ ७ ॥

सबतैं जोरावर, अंतराय अरि, सुफल विघ्न करि डारत हैं।
फलपुंज विविध भर, नयनमनोहर, श्रीजिनवरपद धारत हैं॥प्र०

ॐ ह्रीं अष्टदशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेभ्योमोक्षफलप्राप्तये फलं० ॥ ८ ॥

आठौं दुखदानी, आठनिशानी, तुम ढिग आनी, वारन हो।
दीननिस्तारन, अधमउधारन, 'द्यानत' तारन, कारन हो॥प्रभु०

ॐ ह्रीं अष्टादशदोशरहितषट्चत्वरिंशद्गुणसहितश्री-जिनेन्द्रभगवद्भ्येऽनर्घपदप्राप्तयेअर्घंनिर्वपामीतिस्वाहा ॥ ९ ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

गुण अनन्त को कहि सकै, छियालीस जिनराय।
प्रगट सुगुन गिनती कहूँ, तुम ही होहु सहाय ॥ १ ॥

चौपाई (१६ मात्रा)

एक ज्ञान केवल जिन स्वामी । दो आगम अध्यातम नामी ॥
तीन काल विधि परगट जानी । चार अनन्तचतुष्टय ज्ञानी ॥२॥
पंच परावर्तन परकासी । छहों दरवगुनपरजयभासी ॥
सातभंगवानी परकाशक । आठों कर्म महारिपुनाशक ॥ ३ ॥
नव तत्त्वनकै भाखनहारे । दश लच्छनसौं भविजन तारे ।
ग्यारह प्रतिमा के उपदेशी । बारह सभा सुखी अकलेशी ॥४॥
तेरहविधि चारित के दाता । चौदह मारगना के ज्ञाता ॥
पंद्रह भेद प्रमादनिवारी । सोलह भावन फल अविकारी ॥५॥
तारे सत्रह अंक भरत भुव । ठारे थान दान दाता तुव ॥
भाव उनीस जु कहे प्रथम गुन । वीस अंक गणधरजीकी धुन॥६॥
इकइस सर्व घातविधि जानै । बाइस वध नवम गुन थानै ॥
तेइस निधि अरु रतन नरेश्वर । सो पूजै चौवीस जिनेश्वर ॥७॥
नाश पचीस कषाय करी हैं । देशघाति छब्बीस हरी हैं ॥
तत्त्व दरव सत्ताइस देखे । मति विज्ञान अठाइस पेखे ॥८॥
उनतिस अंक मनुष सब जाने । तीस कुलाचल सर्व बखाने ॥
इकतिस पटल सुधर्म निहारे । बत्तिस दोष समाइक टारे ॥९॥
तेतिस सागर सुखकर आये । चोतिस भेद अलब्धि बताये ॥
पैंतिस अच्छर जप सुखदाई । छत्तिस कारन-रीति मिटाई॥१०॥
सैंतिस मग कहि ग्यारह गुनमें । अठतिस पद लहि नरक अपुनमें
उनतालीस उदीरन तेरम । चालिस भवन इंद्र पूजैं नम ॥११॥
इकतालीस भेद आराधन । उदै वियालिस तीर्थंकर भन ॥
तेतालीस बंध ज्ञाता नहिं । द्वार चवालिस नर चौथेमहिं॥१२॥
पैतालीस पल्य के अच्छर । छियालीस बिन दोष मुनीश्वर ॥
नरक उदै न छियालीस मुनिधुन । प्रकृति छियालीस नाश
दशम गुन ॥ १३ ॥

छियालीसघन सज्जु साज भुव। अंक छियालीस सिरसो कहिकुव
भेद छियालीस अंतर तपवर। छियालीस पूरन गुनजिनवर॥१४॥

अडिल्ल।

मिथ्या तपन निवारन चंद समान हो।
मोहतिमिर वारनको कारन भान हो॥
काल कषाय मिटावन मेघ मुनीश हो।
'द्यातन' सम्यकरतनत्रय गुनईश हो॥ १॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहितषट्चत्वारिंशद्गुणसहितश्री-जिनेन्द्रभगवद्भ्यो पूर्णार्घं निर्वपामि॥

(पूर्णार्घ्यके वाद विसर्जन करना चाहिये)

इति श्रीजिनेन्द्रपूजा समाप्ता।

सरस्वती पूजा।

दोहा।

जनम जरा मृतु छय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भवसागरसों ले तिरै, पूजैं जिनवचप्रीति॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भवभव।। वषट्।

त्रिभंगी।

छीरोदधि गंगा, विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुखगंगा।
भरि कंचन झारी, धार निकारी तृखा निवारी, हित चंगा॥
तीर्थंकरकी धुनि, गनधरने सुनि, अंग रचे चुनि, ज्ञानमई।
सो जिनवरबानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्य भई॥१॥

आगे आचारजने संस्कृत + पूजा रची,
ताके शबद अरथ, कोई समझे ना बनायके ॥
भाई पंडित लोग, भाषा पढ़ी पूजा रची,
ताकी है थिरता नाहि, वांचनकी गायके।
तातें यह छोटी करी, और चित्त नाहिं धरी,
भैया इक घड़ी बाँचो, आछो मन ल्यायके॥ १८ ॥
शैलीके भाईजी: गुलाबचन्द्र पंण्डित जान।
दुलीचन्द्र दयाचन्द्र, खूबचन्द्र जानिये।
सिंगई भगोलेलाल, भाई, उमराव जान,
लीलाधर सुखानन्द, और भी प्रमानिये॥
आय जिन मन्दिर में, शास्त्र सुनें प्रीति सेती,
घड़ी पहर बैठ, घर में बखानिये।
धरम की चर्चा करें, करम की भी आन परे,
छोड़ के कुधर्म 'चन्द्र' धरम हृदय आनिये॥ ११ ॥
दोहा—पंचमकाल कराल में, पाप भयो अति जोर।
कछू धरम रुचि राखिये, 'चन्द्र' कहत कर जोर॥२०॥
वसत जबलपुर नगर में, चलत सु निज कुल रीति।
राखत निशि वासर सदा, जैन धर्म से प्रीति॥ २१ ॥
संवत एक सहस्र नव, शतक सु*सत्ताईस।
भादों कृष्ण त्रयोदशी, बुद्धिवार सु गणीश॥ २२ ॥

इतिपंचपरमेष्ठी विधान।

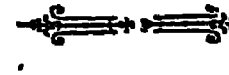

+ श्रीयशोनंद्याचार्यकृत 'पंचपरमेष्ठिपूजा'
* वि० सं. १९२७।

श्री सम्मेदशिखरपूजाविधान।

दोहा।

सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्ट सु थान॥
शिखर सम्मेद सदा नमौं, होय पाप की हान॥ १॥
अगनित मुनि जहँ ते गए, लोक शिखिर के तीर।
तिनके पद पंकज नमौं, नासै भव की पीर॥ २॥

अडिल्ल छंद।

है उज्जल वह क्षेत्र सु अति निर्मल सही।
परम पुनीत सुठौर महा गुन की मही॥
सकल सिद्धि दातार महा रमनीक है।
बन्दौं निजसुख हेत अचल पद देत है॥ ३॥

सोरठा।

शिखिर सम्मेद महान। जग मैं तीर्थ प्रधान है॥
महिमा अद्भुत जान। अल्पमती मैं किम कहो॥४॥

पद्धड़ी छंद।

सरस उन्नत क्षेत्र प्रधान है। अति सु उज्जल तीर्थ महान है।
करहि भक्तिसु जेगुनगाइ कैं। वरहि शिवसुरनरसुखपाइकैं॥५॥

अडिल्ल छन्द।

सुर हरि नरपति आदि सु जिन वन्दन करैं।
भवसागर तैं तिरे नहीं भवदधि परैं॥
सुफल होय जो जन्म सु जे दर्शन करैं।
जन्म जन्म के पाप सकल छिन में टरैं॥ ६

पद्धड़ि छन्द।

श्री तीर्थंकरजिन वर सुबीस। अरु मुनि असंख्य सबगुननईस॥
पहुँचे जँह से केवल सुधाम। तिन सबकौं अब मेरी प्रणाम॥७॥

गीतका छंद।

सम्मेद गढ़ है तीर्थ भारी, सबन को उज्जल करैं।
चिरकाल के जे कर्म लागे, दरस तै छिनमैं टरैं।
है परम पावन पुन्य दाइक अतुल महिमा जानिये।
है अनूप सरूप गिरि वर तासु पूजा ठानिये॥ ६॥

दोहा।

श्री सम्मेद शिखर महा। पूजौं मन वच काय।
हरत चतुर्गति दुःख को, मन वांछित फलदाय॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अत्रावतरावतरसंवौषट् इत्याह्राननम् परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं परि पुष्पञ्जलिं क्षिपेत्।

अष्टकं।

अडिल्ल छन्द—क्षीरोदधि सम नीर सु उज्जल लीजिये। कनक कलस मैं भरकें धारा दीजिये। पूजौ शिखिर सम्मेद सुमन वचकाय जू। नरकादिक दुःख टरैं अचल पद पाय जू॥ ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धिक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥ १॥ पयसौं घिस मलयागिर चन्दन ल्याइये। केसर आदि कपूर सुगंध मिलाइये॥ पूजौ शिखिर०। ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनासनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥ २॥ तंदुल धवल सु उज्जवल खासे धोय के। हेम वरन के थार भरौं शुचि होय कैं॥ पूजौं शिखिर०। ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति

स्वाहा ॥ ३ ॥ फूल सुगंध सु ल्याय हरष सौ आन चढ़ायौ । रोग शोक मिट जाय मदन सब दूर पलायौ ॥ पूजौ शिखिर० । ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥ षट् रस कर नैवेद्य कनक थारी भर ल्यायो ॥ क्षुधा निवारण हेतु सु हूजौ मन हरषायो ॥ पूजौ शिखिर० ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥ लेकर मणिमय दीप सुज्योति उद्योत हो । पूजत होत स्वज्ञान मोहतम नाश हो ॥ पूजौ शिखिर० । ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥ दस विधि धूप अनूप अग्नि मैं खेवहूँ । अष्टकर्म कौ नाश होत सुख पावहू ॥ पूजौ शिखिर० । ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्योअष्टकर्मदहनाथ धूपंनिर्वपामीति स्वाहा॥७॥ भेला लौंग सुपारी श्रीफल ल्याइये । फल चढ़ाय मन वांछित फल सु पाइयं ॥ पूजौ शिखिर० । ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥ जल गंधाक्षित फूल सु नेवज लीजिये । दीप धूप फल लेकर अर्घ चढ़ाइये ॥ पूजौ शिखिर० । ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥ पद्धड़ी छन्द-श्रीविंसति तीर्थंकर जिनेन्द्र । अरु हैं असंख्य बहुते मुनेंद्र ॥ तिनकौं करजोर करों प्रणाम । तिनकों पूजो तज सकल काम ॥ ॐ ह्रींश्री सम्मेदशिखिर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घं । ढार योगीरायसा-श्री सम्मेदशिखिर गिर उन्नत शोभा अधिक प्रमानों । विंशति तिंहपर कूट मनोहर अद्भुत रचना जानो ॥ श्री तीर्थंकर बीस तहांते शिवपुर पहुँचे जाई । तिनके पद पंकज युग पूजौ प्रत्येक अर्घ चढ़ाई । ॐ ह्रीं

श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥ प्रथम सिद्धवर कूट मनोहर आनंद मंगलदाई। अजित प्रभु जहं ते शिव पहुँचे पूजौ मनवचकाई॥ कोड़ि जु अस्सी एक अर्व मुनि चौवन लाख सुगाई। कर्म काट निर्वाण पधारे तिनको अर्घ चढ़ाई। ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर सिद्धकूटते श्री अजितनाथ जिनेन्द्रादि एक अर्व अस्सी कोड़ि चौवन लाख मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्ध क्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥ धवल कूट सो नाम दूसरो है सबकौं सुखदाई। संभव प्रभुसो मुक्ति पधारे पाप तिमिर मिटजाई। धवलदत्त हैं आदि मुनीश्वर नव कोड़ाकोड़ि जानौ। लक्ष बहत्तर सहस बयालिस पंच शतक रिष मानौ॥ कर्म नाश कर अमर पुरी गए वंदौ सीस नवाई। तिनके पद युग जजौ भावसौ हरष हरष चितलाई॥ ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखिर धवल कूटतें संभवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नव कोड़ाकोड़ि बहत्तर लाख ब्यालिस हजार पांच से मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥३॥ चौपाई—आनंद कूट महा सुखदाय। प्रभु अभिनन्दन शिवपुर जाय। कोड़ाकोड़ि बहत्तर जानौ। सत्तर कोड़ि लाख छत्तीस मानौ॥ सहस बयालीस शतक जु सात। कहें जिनागम मैं इस भांत। ऐरिष कर्म काट शिव गये, तिनके पद युग पूजत भये॥ ॐ ह्रीं श्री आनन्दकूटतें अभिनन्दननाथ जिनेन्द्रादि मुनि बहत्तर कोड़ाकोड़ि अरु सत्तर कोड़ छत्तीस लाख ब्यालीस हजार सातसै मुनि सिद्धपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥ अडिल्ल छन्द—अवचल चौथौ कुट महा सुख धाम जी। जहं ते सुमति जिनेश गये निर्वाणजी॥ कोड़ाकोड़ि एक मुनीश्वर जानिये। कोड़ि चौरासी लाख बहत्तर मानिये॥ सहस इक्यासी और सातसे गाइये। कर्म

काट शिव गये तिन्हे सिर नाइये ॥ सो थानिक मै पूजौ मन वच काय जू। पाप दूर हो जाय अचल पद पायजू ॥ ॐ ह्रीं श्री अवचल कूटतै श्री सुमति जिनेन्द्रादि मुनि एक कोड़ा-कोड़ि चौरासी कोड़ि बहत्तर लाख इक्यासी हजार सातसै मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥५॥ अडिल्ल छन्द मोहन कूट महान परम सुंदर कहौ। पद्मप्रभु जिनराय जहां शिव पद लहौ ॥ कोड़ि निन्यानवै लाख सतासी जानिये। सहस तेतालिस और मुनीश्वर मानिये। सप्त सैकड़ा सत्तर ऊपर बीस जू। मोक्ष गये मुनितिन को नमि नित शीश जू कहैं जवाहरदास सुदोय कर जोरकै। अविनासी पद देउ कर्म न खोयकें ॥ ॐ ह्रीं श्री मोहनकूटतैं श्री पद्मप्रभु मुनि निन्यानवै क्रोड़ि सतासी लाख तेतालिस हजार सातसै संताउन मुनि निर्वाण पद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥६॥सोरठा-कूट प्रभात महान। सुंदर जन मणि मोहनौ। श्री सुपार्श्व भगवान, मुक्ति गये अघ नाश कर। कोड़ाकोड़ी उनंचास कोड़ि चौरासी जानिये। लाख बहत्तर जान सात सहस अरु सात सै ॥ और कहे व्यालीस। जंह तें मुनि मुक्ति गये। तिनकौं नम नित सीस दास जवाहर जोरकर ॥ ॐ ह्रीं प्रभात कूटतें श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनंचास कोड़ाकोड़ी बहत्तर लाख सात हजार सातसै व्यालीस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥७॥दोहा—पावन परम उतंग हैं। ललित कूट है नाम ॥ चंद्र प्रभु मुक्तै गये, वंदौ आठौ जाम ॥ नवसै अरु वसु जानियौ। चौरासो रिषि मान। क्रोड़ि बहत्तर रिषि कहे। असी लाख परवान। सहस चौरासी पंच शत। पचवन कहे मुनीश। वसु कर्मन कौ नाशकर। पायो सुखको कंद ॥ ललित कूटतै शिव गये। वंदौं सीस

नवाय ॥ तिनपद पूजौ भाव सौ, निज हित अर्घ चढ़ाय ॥ ॐ ह्रीं ललितकूट तैं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि मुनि नवसै चौरासी अर्ब बहत्तर क्रोड़ अस्सीलाख चौरासी हजार पांचसै पचवन मुनि सिद्धपद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥ पद्धडी छंद) सुबरनभद्र सेा कूट जान। जहं पुष्पदंतकौ मुक्त थान ॥ मुनि कोड़ाकोड़ी कहै जु भाख। अरु कहे निन्यानवे लाख चार ॥१॥ सौ सात सतक मुनि कहे सात। रिषि असी और कहे विख्यात ॥ मुनि मुक्ति गये वसु कर्म काट। वंदौ कर जोर नवाय माथ ॥२॥ ॐ ह्रीं श्री सुप्रभकूटतै पुष्पदंत जिनन्द्रादि मुनि एक कोड़ाकोड़ी निन्यानवै लाख सात हजार चारसै अस्सीमुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥९॥ सुंदरी छंद--सुभग विद्युतकूट सु जानियै । परम अद्भुतता परमानियै ॥ गये शिवपुर शीतलनाथजी नमहुं तिन पद कर धरि माथजी ॥ मुनिजु कोड़ाकोड़ी अष्टहु। मुनि जेा कोड़ी ब्यालिस जान हू ॥ कहे और जु लाख बत्तीस जू। सहस ब्यालिस कहे यतीश जू ॥ और तहं सै नौसै पांच सुजानिये। गये मुनि सिवपुरकों और जु मानिये ॥ करहि पूजा जे मन लायकें। धरहि जन्मन भवमें आयकें ॥ ॐ ह्रीं सुभग विद्युत कूटतै श्री शीतलनाथ जिनेंद्रादि मुनि अष्ट कोड़ाकोड़ी ब्यालीस लाख बत्तीस हजार नौसै पांच मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धिक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥१० हार योगीरसा-कूटजु संकुल परम मनोहर श्रीयांस जिनराई। कर्म नाश कर अमरपुरी गये, वंदो शीस नवाई ॥ कोड़ाकोड़ जुकहै क्यानवै क्यानवै, कोड़ प्रमानौ ॥ लाख क्यानवै साढ़े नवसै, इकसठ मुनीश्वर जानो। ताऊपर ब्यालीस कहे हैं श्री मुनिके गुन गावै। त्रिविध येाग कर जेा कोई पूजै सहजानंद पद पावै ॥ ॐ ह्रीं

संकुल कूटतैं श्रीयांसनाथ जिनेन्द्रादि मुनि क्ष्यानवे कोड़ाकोड़ी क्ष्यानवे क्रोड़ क्ष्यानवे लाख साढ़ेनौ हजार ब्यालीस मुनि सिद्ध पद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥११॥ कुसुमलता छंद—श्री मुनि संकुल कूट परम सुंदर सुखदाई। विमलनाथ भगवान जहां पंचम गति पाई॥ सात शतक मुनि और ब्यालिस जानिये। सत्तर कोड़ सात लाख हजार छै मानिये॥ दोहा—अष्ट कर्मको नाश कर, मुनि अष्टम क्षिति पाय॥ तिनको मैं वंदन करों, जन्ममरण दुख जाय॥ ॐ ह्रीं श्री संकुलकूटतैं श्री विमलनाथ जिनेंद्रादि मुनि सत्तर क्रोड़ सात लाख छै हजार सातसै ब्यालीस मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धिक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥१२॥ अडिल—कूट स्वयंप्रभु नाम परम सुंदर कही। प्रभु अनंत जिननाथ जहां शिवपद कही॥ मुनि जु कोड़ाकोड़ी क्ष्यानवं जानियै। सत्तर कोड़ जु सत्तर लाख बखानिये॥ सत्तर सहस्र जु और सातसै गाइये। मुक्ति गये मुनि तिन पद शीस नवाइये॥ कहै जवाहर दास सुनो मन लायकैं। गिरवरकों नित पूजो मन हरषायकै॥ ॐ ह्रीं स्वयंभू कूटतैं श्री अनंतनाथ जिनेंद्रादि मुनि क्ष्यानवे कोड़ाकोड़ी सत्तर लाख सात हजार सातसै मुनि सिद्धपद प्र साय सिद्धिक्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥१३॥ चौपाई—कूट सुदत्त महा शुभ जानों। श्री जिनधर्म नाथकों थानों॥ मुनि जु कोड़ाकोड़ी उन तीस और कहे ऋषि कोड़ उनीस॥ लाख जु नव्वै सहस्र नौ जानों। सात शतक पंचा नव मानों॥ मोक्ष गये वसु कर्मन चूर। दिवस रैन तुमही भरपूर॥ ॐ ह्रीं श्री सुदत्त कूटतै श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि मुनि उनतीस कोड़ाकोड़ी उनीस क्रोड़ नव्वै लाख नौ हजार सातसै पंचानवै मुनि सिद्धपद प्राप्ताय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥१४॥ है प्रभासी कूट

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं वरना। गनफ-निवृंद जजै तित बहु विधि,मैं पूजूं भवहरना॥मोहिराखौ०॥५॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावास्यायां मोक्षमङ्गलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

अथ जयमाला। छंदहरिगीता (२८ मात्रा)

गनधर असनिधर चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा॥
दुखहरन आनँदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं।
सुकुमाल गुन मणिमाल उन्नत, भालकी जयमाल हैं॥१॥

छंद धत्तानंद (३१ मात्रा)

जय त्रिशलानंदन हरिकृतवंदन, जगदानंदनचंद वरं।
भवतापनिकंदन तनमनवंदन, रहितसपंदन नयन धरं॥२॥

छंद तोटक।

जय केवलभानुकलासदनं। भविकोकविकाशन कंजवनं॥
जगजीत महारिपु मोहहरं। रजज्ञानदृगांबरचूरकरं॥ १॥
गर्भादिक मंगल मंडित हो। दुख दारिदको नित खंडित हो।
जगमाहिं तुमी सत पंडित हो। तुमही भवभावविहंडित हो॥१॥
हरिवंससरोजनकौं रवि हो। बलवंत महंत तुमी कवि हो॥
लहि केवल धर्मप्रकाश कियौ। अवलौं सोई मारग राजतियौ॥३॥
पुनि आपतने गुणमाहिं सही। सुर मग्न रहैं जितने सब ही।
तिनकी वनिता गुण गावत हैं। लय ताननिसौं मनभावत हैं॥४॥
पुनि नाचत रंग अनेक भरी। तुव भक्तिविषै पग एम धरी।
झननं झननं झननं झननं। सुर लेत तहाँ तननं तननं॥५॥

घननं घननं घनघंट बजैं। द्रुमदं द्रुमदं मिरदंग सजैं।
गगनांगणगर्भगता सुगता। ततता ततता अतता वितता॥६॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है। सुरताल रसाल जु छाजत है।
सननं सननं सननं नभमैं। इकरूप अनेक जु धार भमैं॥७॥
कइ नार सु बीन बजावतु हैं। तुमरो जस उज्वल गावतु हैं।
करतालविषैं करतालधरैं। सुरताल विशाल जु नाद करैं॥८॥
इन आदि अनेक उछाहभरी। सुरभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी।
तुमही जगजीवनकेपितु हो। तुमही बिन कारणके हितहो॥६॥
तुमही सब विघ्न विनाशन हो। तुमही निज आनंदभासन हो।
तुमहीं चितचिंतितदायक हो। जगमाहिं तुमी सब लायकहो॥१०
तुमरे पनमंगलमाहिं सही। जिय उत्तम पुण्य लियौ सब ही।
हमको तुमरी सरनागत है। तुमरे गुनमैं मन पागत है॥११॥
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये। जबलौं वसुकर्म नहीं नसिये।
तबलौं तुम ध्यान हिये वरतो। तबलौं श्रुतचिंतन चित्तरतो॥१२॥
तबलौं व्रत चारित चाहत हौं। तबलौं शुभ भाव सुगावत हौं।
तबलौं सतसंगति नित्य रहो। तबलौं मम संजम चित्त गहो॥१३
जबलौं नहिं नाश करौं अरिको। शिवनारि वरौं समताधरिको।
यह द्यो तबलौं हमको जिनजी। हम जाचत हैं इतनी सुनजी॥१४

छंद घत्तानन्द।

श्री वीर जिनेशा नमित सुरेशा, नाग नरेशा भगति भरा।
'वृन्दावन ध्यावैं' वांछित पावैं शर्मवरा॥ १५॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा।

श्री सनमति के जुगल पद, जो पूजहि धर प्रीति।
वृन्दावन सो चतुर नर, लहै मुक्त नवनीत॥ १६॥

धारेसंस्कृत।

जयमालासहित।

वसन्त तिलकाछन्द।

यःपांडुकामल शिलागतमादि देव । सिस्नापयामिसु वरान्सुरशैलमूर्द्धि न । कल्याणमीश्वर हमंक्षित तोयपुष्पैः । सम्भावयामिपुरएवतदीपविम्बम् ॥ १ ॥ जिन बिम्ब स्थापनं ॥ सत्पल्लवार्चितमुखान्कलधौतरूप्य । तन्नारकूटघटितापयसं सपूर्णान्। संवाजतो मिवगताचतुरासमुद्रान् । संस्थापयामि कलशां जिनवेदिकान्ते । कलश स्थापनम् ॥ २ ॥ दूरावनाम्र-सुरनाथकिरीटकोटी । संलग्नरत्नकिरणाक्षविधूसरांगी । प्रस्वेदतंपरिमलामुकतेप्रेकोष्टं । भक्त्याजलैंजिनपतीवदुधा-भिषेक ॥ ३ ॥ जलस्नानं ॥ भक्त्याललाटतटदोसनिवेसतोवै । हस्तीस्तुतासुरवरासुरमर्तिनाथै । तत्कालपेलतमहेक्षुरसंस्य-धारा। सद्यापुनातुजिनविम्वगतैवजुख्यान् ॥ ४ ॥ इक्षुरसस्ना-पनं ॥ उत्कृष्टवर्णनवहेमरसाभिरामा । देहप्रभावलयसंकमलू-प्रदीस्थां । धाराघृतस्यशुभगन्धगुणानुमेयं । वन्देर्हतंसुरभिसं-स्नपनंकरोमिः ॥ ५ ॥ घृतस्नापनं ॥ सम्पूर्णशारदशशांकमरीच जालैः । सद्यैरिवात्मयशसाम्विलाप्रवाहै । क्षीरै जिनाशुचित रैरभिषिंचमानं । सम्पादयन्तिमभिचिन्तसमीहितानं ॥ ६ ॥ दुग्धस्नापनं ॥ दुग्धाब्धिवीचिचयसंचितफेनराशै । पांडुत्व कान्तिमिवधारयतामतीवा । दध्यागताजिनपतेप्रतिमंसुधारा । सम्पादितंसयदिवांक्षित सिद्धयेव ॥ ७ ॥ दधिस्नापनं ॥ संस्ना पितस्यघृतदुग्धदधिप्रवाहै । सर्वाभिरौषधिभिरंहतउज्ज्वला-

भी। उद्वर्त्ततस्यचिद्धामभिषेकमेला। कालेयकुम्कुमरसोत्कट वारिपूरै॥ ८॥ सर्वौषधीस्नापनं॥ इष्टैमनोरथसतैरितभव्य पुंसं। पूर्णैसुवर्णकलशैनिखिलावसानैसन्सारसागरविलंघनहे· तुसेतौ। मप्लावरोत्रभुवनाद्धिपतिजिनेंद्रं॥ ६॥ चतुरकलश स्नापनं॥ द्रव्यैरनलपघनसारचतुरासमुद्रैः। रामोदवासितस· मस्तदिगन्तरालैः। मिश्रीकृतेनपयसाजिनपुंगवानं। त्रैलोक्य पावनमहंस्नपनंकरोमिः॥ १०॥ गन्धोदकस्नापनं॥ श्लोक॥ निर्मलःनिर्मलीकरणं पवित्रं पापनासनं। जिनगन्धोदकंवन्दे। सर्वपापविनाशनं॥ ११॥ गन्धोदकवन्दनं॥ अथ जयमाला॥ अन्तमहि जिनेश्वर महि परमेश्वर इन्द्रन्हवनसंजोइयऊ। नव देतिविकल्पो हियराजम्पो सुरंपरंपरबोलियऊ॥ पद्धड़ीछन्द॥ क्षिमकलशहुरंवालेाजिनेंद्र। तसुमन में जम्पोसुरवरेन्द्र। दिट्ठो· जिनेन्द्रबालोशरीर। नयनेरुअंगूठाहनोवीर॥ १॥ डगमगो मेरु कम्पो सुरेश। वीराधिवीरजाने जिनेश। सुरनाथ सुरेश भये अनंद। त्रैलोक्य नाथ जहां भुवन चन्द्र॥ २॥ जय जय बालेापन भुवन मन्थ। कन्दर्प दलन निज मुक्ति पंथ। सुरनर पतियंजर गुणहऋद्धि। तुम दर्शन स्वामी होहुसिद्ध॥ ३॥ तहां इन्द्र सुन्दीन करायवत्र। ते तीसकोटि शिरधरें .क्षत्र। ढारेवटसहस्रकुअष्टनीर। क्षीरोदधि से ला सुरसुधीर॥ ४॥ कुमकुम चंदन चर्चै शरीर। भवताप दहननाशन सुवीर। जे अन्य विरस गुरुकर विभाव। जे अमर लहैं शिव पुरी ठाव॥ ५॥ उज्ज्वल अक्षत आगे धरेहु। अरिहन्तसिद्धिपुनि पुनिभनेहु॥ जैनेवजनवविधिथारदेहि। मनवचनसफलकाया करेहि॥ ६॥ आतऊ इन्द्रकरचलेाशांति। मणिरत्नप्रदीपहि प्रज्वलांति॥· तंधूपअगरखेवैंसुगन्ध। मयभुंजयनरधरपट्टवन्ध ॥ ७॥ फलनालिकेलिजिनचढ़नयोग्य। करभावधरैंपुनलहैं

भोग्य ॥ वसुविधिपूजाकर चलोइन्द्र। दुन्दुभीबाजेंसुरभया नन्द ॥ ८ ॥ नरपुहिमिलोयरंजोमहेन्द्र। सब विधिसे भक्ति करीसतेन्द्र। केसोबहुनन्दनकरहिएव । फिरपालभनेंजिनचर णसेव ॥ ९ ॥ घत्ता। सम्यक्त्वदृढ़ावे ज्ञान बढ़ावे विविधभांति स्तुति करऊ। जिनवरमनध्यावे शिव पद पावे भव समुद्रदुस्त-रतिरऊ। इत्याशीर्वादः।

॥ इति धारें नयमाकसहित सम्पूर्णम् ॥

जन्मकल्याणक पूजा।

दोहा।

दोष अठारह रहित प्रभु, सहित सुगुण क्यालीस।
तिन सब की पूजा करौं, आय तिष्ठ जगदीश ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्री-मदर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट्।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिन्! अत्रममसन्निहितो भव भव। वषट्।

अष्टक।

(ज्ञानतरायकृत नन्दीश्वर द्वीपाष्टक की चाल।)

शुचिक्षीरउदधिको नीर, हाटक भृंग भरा।
तुमपदपूजों गुणधीर, मेटो जन्मजरा ॥
हरि मेरुसुदर्शन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजें इन गुण गाय, मंगल मोद धरें ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादोषरहित षट् चत्वारिंषद्गुण सहित श्री-

मदर्हत्परमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

केसर घनसार मिलाय, शीत सुगन्धघनी।
जुगचरनन चर्चौं लाय, भव आतापहनी ॥
हरि मेरु सुदर्न जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इत गुण गाय, मंगल मोद धरें ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिने संसारातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत मोती उनहार, स्वेत सुगन्ध भरे।
पाऊं अक्षयपद सार, ले तुम भेंट धरे ॥
हरि मेरुसुदर्शन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इतगुणगाय, मङ्गल मोद धरें ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

बेल्हा जूही गुलाब, सुमन अनेक भरे।
तुम भेंट धरों जिनराज, काम कलंक हरे ॥
हरि मेरु सुदर्शन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इतगुण गाय, मंगल मोद धरें ॥४॥

ॐ ह्रीं अष्टादश दोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी गोझा पकवान, सुन्दर ले ताजे।
तुम अग्र धरौं गुण खान, रोग छुधाभाजे ॥
हरि मेरु सुदर्शन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इत गुण गाय, मंगल मोद धरें ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन मय दीपक चार, तुम आगे लाऊं।
मम तिमिर मोह छैकार, केवल पद पाऊं॥
हरि मेरु सुदर्शन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इत गुण गाय, मंगल मोद धरें॥ ६॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु तगर कपूर, चूर सुगन्ध करो।
तुम आगे खेवत भूर, वसुविध कर्म हरों॥
हरि मेरु सुदरशन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इत गुण गाय, मंगल मोद धरें॥ ७॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमद्दर्हत्परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल अंगूर अनार, खारक थार भरों।
तुम चरन चढ़ाऊं सार, तो फल मुक्ति वरों॥
हरि मेरु सुदर्शन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इत गुण गाय, मंगल मोद धरें॥ ८॥

ॐ ह्रीं अष्टादश दोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक आठ अदोष, तिनका अर्घ करों।
तुम पद पूजों गुण कोष, पूरन पद सु धरों॥
हरि मेरु सुदरशन जाय, जिनवर न्हौन करें।
हम पूजैं इत गुण गाय, वदरी मोद धरें॥ ९॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद्गुणसहित श्रीमदर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आरती।

(जोगीरासा।)

जन्मसमय उच्छव करने को, इन्द्र शची युत धायो।
तिहुँ को कछु वरणन करवेको, मेरो मन उमगायो॥
बुधि जन मोकों दोष न दीजो, थोरी बुद्धि भुलायो।
साधू दोष क्षमै सब ही के, मेरो करो सहायो॥ १॥

(छन्द कामिनी—मोहन मात्रा २०।)

जन्म जिनराज को जबहिं निज जानियों।
इन्द्र धरनिंद्र सुर सकल अकुलानियों॥
देव देवाङ्गना चलियँ जयकारतीं॥
शचियँ सुरपति सहित करतिं जिन आरती॥ २॥

साजि गजराज हरि लक्ष जोजन तनो। वदन शत वदन प्रति दन्त वसु सोहनो॥ सजल भरि पुर सरतंत प्रति धारतीं। शचियँ सुरपति सहित, करतिं जिन आरतीं॥ ३॥ सरहिं सर पंच दुय एक कमलिनी बनी। तासु प्रति कमल पच्चीस शोभा घनी॥ कमल दल एक सौ आठ विस्तारतीं। शचियं सुरपति सहित करत जिन आरतीं॥ ४॥ दलहिं दल अप्सरा नाचहीं भावसों। करहिं सङ्गीत जयकार सुर चावसों॥ तगड़दा तगड़ थेई करत पग धारतीं। शचियं सुरपति स०॥५॥ तासु करि बैठि हरि सकल परिवारसों। देहि पर दक्षिणा जिनहिं जयकारसों॥ आनि कर शचियं जिन नाथ उर धारतीं। शचियं सुरपति स०॥ ६॥ आन पांडुक शिला पूर्व मुख थाप जिन। करहिं अभिषेक उच्छाह सो अधिक तिन॥ देखि

इन्द्र सुर सब साज ले इहि भांत पूजा विस्तरौं ॥ तेहू० ॥ ५ ॥
दीप रतनन जोत जामें नृत्य कर आरति करौं।
इन्द्र सुर सब साज ले इहि भांत पूजा विस्तरौं ॥ तेहू० ॥ ६ ॥
धूप दशाङ्गी खेइये वसु कर्म भव भव के दहैं।
इन्द्र सुर साज ले इह भांत पूजा विस्तरौं ॥ तेहू० ॥ ७ ॥
फलयुक्त लै आगे धरैं प्रभू फल फले से अनसरौं।
इन्द्र सुर सब साज ले इहि भांत पूजा विस्तरौं ॥ तेहू० ॥ ८ ॥
वसु द्रव्य ले एकत्र इह विधि अर्घ ले मङ्गल पढ़ौं।
इन्द्र सुर सब सब साज ले इहि भांत पूजा विस्तरौं॥तेहू०॥९॥

—:*:—

अथ शान्तिपाठः प्रारभ्यते।

(शान्तिपाठ बोलते समय दोनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करते रहना चाहिये)

दोधकवृत्तम्।

शान्तिजिनं शशिनिर्म्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्।
अष्टशताङ्कितलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ॥ १ ॥
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च।
शान्तिकरं गणशान्तिमभीप्सुः षोडशतीर्थकरं प्रणमामि ॥२॥
दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिर्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ॥ ३ ॥
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं पठते परमां च ॥ ४ ॥

---

* अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिर्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्रं सत्प्रातिहार्य्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ (यह श्लोक क्षेपक है, इसे बोलना न चाहिये।)

पद्मप्रभारुणमणिद्युतिभासुराङ्ग त्व० ॥ ३ ॥ अर्हन् सुपार्श्व। कदलीदल वर्णगात्र प्रालेयतारगिरिमौक्तिकवर्णगौर। चन्द्रप्रभ-स्फटिकपाण्डुरपुष्पदंत त्व० ॥ ४ ॥ सन्तप्तकाञ्चनरुचे जिन शीतलाख्यश्रेयान्विनष्टदुरिताष्टकलङ्कपङ्क। बन्धूकबन्धुररुचे जि-नवासुपूज्य त्व० ॥ ५ ॥ उद्दण्डदर्पकरिपो विमलामलाङ्गस्थे-मज्जनन्तजिदनन्तसुखाम्बुराशे । दुष्कर्मकल्मषविवर्जित धर्म-नाथ त्व० ॥ ६ ॥ देवामरीकुसुमसन्निभशान्तिनाथ कुन्थो दया गुणविभूषणभूषिताङ्ग। देवाधिदेव भगवन्नरतीर्थनाथ त्व०॥७॥ यन्मोहमल्लमदभञ्जनमल्लिनाथ क्षेमङ्करावितथशासनसुव्रताख्य। यत्सम्पदा प्रशमितो नमिनामधेय त्व० ॥ ८ ॥ तापिच्छगुच्छ-रुचिरोज्ज्वल नेमिनाथ घोरोपसर्गविजयन् जिनपार्श्वनाथ। स्याद्वादसूक्तिमणिदर्पणवर्द्धमान त्व० ॥ ९ ॥ प्रालेयनीलहरि-तारुणपीतभासं यन्मूर्तिमव्यसुयरत्नावलधं मुनीन्द्राः ध्यायन्ति सप्ततिशतं जिनवल्लभानां त्व० ॥ १० ॥ सुप्रभातं सुनक्षत्रं माङ्गल्यं परिकीर्तितम् । चतुर्विंशतितीर्थानां सुप्रभातं दिने दिने ॥ ११ ॥ सुप्रभातं सुनक्षत्रं श्रेयःप्रत्यभिनन्दितम् । देवता ऋष्यः सिद्धाः सुप्रभातं दिने दिने ॥ १२ ॥ सुप्रभातं तवैकस्य वृषभस्य महात्मनः । येन प्रवर्तितं तीर्थं भव्यसत्व सुखावहम् ॥ १३ ॥ सुप्रभातं जिनेन्द्राणां ज्ञानोन्मीलितचक्षुषाम् । अज्ञा-नतिमिरान्धानाम् नित्यमस्तमितो रविः ॥ १४ ॥ सुभातं जिने-न्द्रस्य वीरः कमललोचनः ॥ येन कर्माटवी दग्धा शुक्लध्यानो-ग्रवह्निना ॥ १५ ॥ सुप्रभातं सुनक्षत्रं सुकल्याणं सुमङ्गलम्। त्रैलोक्यहितकर्तृणां जिनानामेव शासनम् ॥ १६ ॥

इति सुप्रभातस्तोत्रं समाप्तं ॥

अद्याष्टकस्तोत्रम् ।

अद्य मे सफलं जन्म नेत्रे च सफले मम । त्वामद्राक्षं यतो देव हेतुमक्षयसम्पदः ॥ १ ॥ अद्य संसारगम्भीरपारावारः सुदुस्तरः । सुतरोऽयं क्षणेनैव जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ २ ॥ अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमले कृते । स्नातोहं धर्मतीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥ अद्य मे सफलं जन्म प्रशस्तं सर्वमंगलम् । संसाराणर्वतीर्णोहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ४ ॥ अद्य कर्माष्टकज्वालं विधूतं सकषायकम् । दुर्गतेर्विनिवृत्तोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ५ ॥ अद्य सौम्या ग्रहाः सर्वे शुभाश्चैचकादशस्थिताः । नष्टानि विघ्नजालानि जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ६ ॥ अद्य नष्टो महाबन्धः कर्मणां दुःखदायकः । सुखसङ्गं समापन्नो जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ७ ॥ अद्यकर्माष्टकं नष्टं दुःखोत्पादनकारकम् । सुखाम्भोधिनिमग्नोऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ८ ॥ अद्य मिथ्यान्धकारस्य हन्ता ज्ञानदिवाकरः । उदितो मच्छरीरेऽस्मिन् जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ९ ॥ अद्याहं सुकृती भूतो निर्धूताशेषकल्मषः । भुवनत्रयपूज्योऽहं जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ १० ॥ अद्याष्टकं पठेद्यस्तु गुणानन्दितमानसः । तस्य सर्वार्थसंसिद्धिर्जिनेन्द्र तव दर्शनात् ॥ ११ ॥

इति अद्याष्टकं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—:*:—

सूतकनिर्णय ।

सूतक में देव शास्त्र गुरुका पूजन प्रक्षालादि तथा मन्दिरजीका वस्त्राभूषणादिको स्पर्शनकी मना है तथा पान दान भी वर्जित है ॥ सूतक पूर्ण होने के बाद प्रथम दिन पूजन

विनती, भूधर दास कृत।

अहो जगति गुरु एक सुनिये अर्ज हमारी। तुम प्रभु दीन दयालु मैं दुखिया संसारी ॥१॥ इस भव वन के मांहि काल अनादि गमायो। भ्रमत चतुर्गति मांहि सुख नहीं दुख बहु पायो ॥२॥ कर्म महा रिपु जोर ये कलकान करें जी। मन माने दुख देय काहू से नहिं डरें जी॥३॥ कब हूँ इतर निगोद कब हूँ कि नर्क दिखावें। सुर नर पशुगति मांहि बहु विधि नाच नचावें ॥४॥ प्रभु इनको परसङ्ग भव भव मांहि बुरो जी। जो दुख देखो देव तुम से नाहिं दुरो जी ॥५॥ एक जन्म की बात कहि न सकों सब स्वमी। तुम अनन्त पर्याय जानत अन्तर्यामी ॥ मैं तो एक अनाथ ये मिल दुष्ट घनेरे। कियो बहुत बेहाल सुनिये साहब मेरे ॥७॥ ज्ञान महानिधि लूट रंक निबल कर डारो। इन ही मो तुम मांहि हे प्रभु अन्तर पारो ॥८॥ पाप पुण्य मिल दोय पायन बेरी डारी। तन कारागृह मांहि मोह दियो दुख भारी ॥९॥ इनको नेक बिगार मैं कुछ नाहि करो जी। बिन कारण जगबन्धु बहुविधि बैर धरो जी ॥१०॥ अब आयो तुम पास सुन कर सुयश तुम्हारो। नीत निपुण महाराज कीजे न्याय हमारो ॥११॥ दुष्टन देह निकाल साधुन को रख लीजे। बिनवे भूधर दास है प्रभु ढील न कीजे ॥१२॥

इति।

बाह्याभ्यन्तर संग त्याग जिन मुद्राधार भये अविकारी।
ज्ञानानन्द स्वरूप मगनमित तिन जिन पथ कब होहु विहारी।६।

उत्तम ब्रह्मचर्य।

पर वनिता तजो बुधिवान
युगम भव दुख देन हारी प्रगट लखहु सुजान ॥ टेक ॥
कुगति बहन सु सकल गुण गण गहन दहन समान।
सुयश शशि कों मेघमाला सर्व ओगन वान ॥ १ ॥
एक छिन पर दार रति सुख काज करत अज्ञान।
करत अछति सकल नरक दुख सहत जलधन मान ॥ २ ॥
अन्य रामा दीप में ह्वे सुलभ परत अजान।
यहां ही दण्डादि भोगत पुन कुगति दुखदान ॥ ३ ॥
स्वदारा विन नारि जननी सुता भगिनी मान।
करहिं वांछा स्वप्न मैं नहिं धन्य पुरुष प्रधान ॥ ४ ॥
परबधू मन वचन तें तज शील धर अमलान।
स्वर्ग सुख लह पुन विहारी होहि अवचल थान ॥ ५ ॥

जिन वाणी की स्तुति।

करों भक्ति तेरी हरो दुख माता भ्रमण का ॥ टेक ॥
अकेला ही हूँ मैं कर्म सब आये सिमटके।
लिया है मैं तेरा शरण अब माता सटक के ॥ १ ॥
भ्रमावत है मोकों कर्म दुख देता जनम का ॥ करो० ॥ १ ॥
दुःखी हुआ भारी भ्रमत फिरता हूँ जगत में।
सहा जाता नाहीं अकल घबड़ाई भ्रमण में ॥
करों क्या मा मेरी चलत बस नाहीं मिटन का ॥ करो० ॥ २ ॥
सुनो माता मेरी, अरज करता हूँ दरद मैं।

करना हमें आज क्या क्या है यह विचार निज काज करें।
कार्यिक शुद्धि क्रिया करके फिर जिन दर्शन स्वाध्याय करें॥
मौन धार कर तोषित मनसे क्षुधा वेदना उपशम हित।
विघ्न कर्म के क्षयोपशम से भोजन प्राप्त करें परमित॥
हे जिन हो हितकर यह भोजन तन मन हमरे स्वस्थ रहें।
आलस तजकर "दीप" उमंग से निज परहित में मगन रहें॥

सांझ के भोजन समय की इष्ट प्रार्थना।

जय श्री महावीर प्रभू की कह अरु निज कर्त्तव्य पूरण कर।
संध्या प्रथम मौन धारण कर भोजन करें शांत मन कर॥
परमित भोजन करें ताकि नहिं आलस अरु दुःस्वप्न दिखें।
"दीप" समय पर प्रभू सुमरण करें सोवें जगे सुकार्य लखें॥

कुगुरु, कुदेव कुशास्त्र की भक्ति का फल।

अन्तर बाहर ग्रन्थ नहिं, ज्ञान ध्यान तप लीन।
सुगुरु बिन कुगुरु नमें, पड़े नर्क हो दीन॥ १॥
दोष रहित सर्वज्ञ प्रभु, हित उपदेशी नाथ नाथ।
श्री अरहंत सुदेव, तिनको नमिये माथ॥ २॥
राग द्वेष मल कर दुखी, हैं कुदेव जग रूप।
तिनकी वन्दन जो करें, पड़े नर्क भव कूप॥ ३॥
आतम ज्ञान वैराग सुख, दया छमा सत शील।
भाव नित्य उज्जल करें, है सुशास्त्र भव कील॥ ४॥
राग द्वेश इन्द्री विषय, प्रेरक सर्व कुशास्त्र।
तिनको जो वन्दन करे, लहै नर्क विट गात्र॥५॥